भर्तृहरि

सूर्य
प्रकाशन
मंदिर,
बीकानेर

कृष्णकुमार कौशिक

बां गुरु जी नै,

जिकां 'ळ' लिखणो सिखायो ।

विगत

भर्तृक्रियो

परथावो

एक एक कर'र सगळा रा सगळा आंगणै मांय भेळा होग्या। काको साख करण गयोड़ो हो। आयो तो भाभी रै पगां रै घूघरिया सा बन्दग्या। बीरै मोभी बेटै रो साख करण गयो हो।

तीनू भायां रो परवार एक ही घर मांय भेळो ही रैवतो हो। इण सदी मे ओ ही एक ईसो परवार हो। कै जको न्यारो-न्यारो खिड्योड़ो कोनी हो।

बडोड़ो भाई तो दो एक साल पैलीं सुरगां भेळो होग्यो हो। बाकी दोनू भाई ही दुकान-मकान सम्हाळ राख्या हा। बडोड़ै भाई रा तीन छोरा अर दो छोरियां, विचोटियै रो एकळ बेटो अर पांच छोरियां, छोटियै री तीन वेट्यां अर तीन ही बेटा। बूढळी कंड़क मे ही। तीनू बहुआं रा खिडायाड़ा सतरा पोता पोती अर दो विधवा वेट्यां समेत घर रा चोबीसूं प्राणी आगणै मांय भेळा होय'न छोटियै सेठ कानी ताकण लागग्या।

छोटियो सेठ के मरद हो। बास री लुगायां में बीरी तूती बोलती। कीरै दायजै में के आयो, कीरो छूछक चोखो-माड़ो, अर सिधारा रा मुल्यांकन छोटियै बिना कुण करै। लटका कर-कर बोलण में लुगाया नै दूर बिठा देवै। घर मे बीरो ही सारो-न्यारो। किस्सोड़ी बहु कद के पैरसी, घर मे के बणसी, साग-पात स्यू लेय'र न कपड़ा-लतां तांई बीरी ही मरजी चालै।

जद छोटियो सेठ बडोड़ी भाभी रै मोबी बेटै री साख कर'र आवै तो मीन मेख कुण काढ सकै। छोटियै, मोडै गो बीटो उतारियो ही हो। कै मा पूछियो, "कें करयायो रे मोहन?"

इण सवाल रै सागै ही अड़ताळीस आंख्या बीनै घूर'र देखण लागी तो छोटियो सेठ बोल्यो, "आपणै तो बो साख नापास है ।"

"क्यू रे बेटा ?" बूढ़ळी बुदबुदाई ।

"क्यू क्यांरी, बांरै घर में तो धूड़ रा दाणा ही कोनी ।" छोटियो बोल्यो ।

बींरी छोटकी भाभी चाय रो गिलास अर बाटकड़ी ल्यार राख दी । छोटियो पीवण लागग्यो । सगळा आगैरी बात सुणन खातर कान माड राख्या हा । पण चाय रा सुरड़का रै अलावा कीं नी सुणीजै ।

"बात कांई हुई मोहन जी ?" बडोड़ी भाभी पूछ्यो ।

छोटियो कीं अचकचार बोल्यो, "भाभी, तू फिकर मत कर । सुरेसियै नै ब्यावस्या, पण आछै ठिकाणै ब्यावस्या । नी तो लोग म्हारै नाक पर कोनी देसी' कै छोरै रै काकां इसो परथावलो कर्‌यो । म्हारो भाई जे आज सुरगां मांय है, तो के छोरो सूनो थोड़ो ही है ?"

"फेर'ही तू बात तो खोल'र बता, कै बठै के कुछ होयो ?" बूढ़ळी एकर ओरू पूछ्यो ।

थोड़ी ताळ रुक'र छोटियो सेठ बोल्यो, "मैं अर सुरेसियै रो मामो सरसै पूच्या तो म्हानै सुरेसियै रै मामै रो साळो टेसण पर मिलग्यो । म्हे सीधा छोरी आळै रै घरै ही चलेग्या ।" आंगळ्या रा कटका काढ'र बोल्यो, "एक फूट्योड़ी सी हेलड़ी देख'र मेरो तो पहले ही माथो ठणक्यो । पण फेर सोच्यो कै ले जीवड़ा, देख तो सई के-के दीखै । मांह बड़ता'ई ऊंची पैड्‌यां चढ़'र बैठकड़ी कानी गया । छोरी रो दादो फाट्योड़ी सी पागडी अर मैली सी धोतड़ी पैरै बैठ्यो हो । रामा-स्यामा होई अर बूढ़ियै आपरै बेटै नै हेलो मार्‌यो । म्हे बैठ ग्या । छोरी रो बाप आयो अर कई ताळ तांई ईनै-बीनै री बात्यां होवती रैयी । म्हारै खातर चावड़ी आयगी । लीली-लीली धोवण सी चाय, मनै तो उबाक उठै ही । मसाई गळै स्यूं नीचै सरकाई ।"

- सागै नास्तो-नूस्तो की कोनी दियो के ?" मां पूछ्यो ।

'पड्या नास्ता," छोटियै सेठ बतावणो चालू राख्यो, "कोई रद्दीड़

हलवाई रा डकोळी भुजिया, एक प्लेटड़ी मांय मेल्या हा। बियां'ई पड्या रया। कुण चावै हो?" एक मोटी सी डकार लेय'र बोल्यो, "म्हे एक बजार कानी जावण रो कैय'र चालण लाग्या तो, छोरी रै दादै म्हानै रसोई पाणी रो कयो। म्हे कयो'कै एकर तो बजार कानी जाइयावां, फेर देखी ज्यासी।" खूंजै स्यूं किरचो काढ'र मूंडै मे घाल लियो।

"म्हे पैंड्या तांई आया तो सामनै दरवाजै रै खनै एक बींदणी सी बैठी बरतणियां मांजै ही। ईसाई तो हाथ डंडै सा पड्या अर कान भी सूनां दीसै हा। को टूम ही' न टाकी। म्हूं तो आंख माखर काढ़ ली। सोच्यो आ जरूर छोरी री भाभी है। ई उमर मांय ही पैरण-ओढ़ण नै की कोनी तो आं खनै देवण नै के पड्यो है। फेर पैंड्या उतर'र चालण लाग्या तो छोरी रो भाई हाथ मे एक च्यार किलो आळी डालडा घी री पीप्ली लिये सामै टकर्‌यो। म्हूं तो बजार मे आय'र चाय पी तो की जिसोरी होयो।" सेठ री जाड़ नीचै किरचै रो कटीड़ बोल्यो।

"घूम-फिर'र दुपारै'सी म्हे फेर पूंच्या। अबकै बूढ़ियो धोबी रो धोयोड़ो धोती-कुर्तो अर कळकतिया पाग बांधे बैठ्यो हो। मैं सोच्यो, अब के रग दिखावै है; म्हे तो पारख करली।" एकर ओजू किरचै रो कटीड़ बोल्यो।

"बात छोरी देखण री आई। पैलां तो म्हानै बीरै हाथ रो काम दिखायो, अै सूटर बणेड़ी, कसीदा काढ्योड़ा, मेजपोस, थाळपोस, अर घणी सारी चीजा री परदरसनी सी लगा राखी ही। फेर म्हे जीमण बैठ्या तो छोरी थाळी-राखण आयी। रंग तो साफ हो, आपणी सुमनड़ी जिसो-सो'ही समझ ले। नाक-नक्सो भी ठीक-ठाक ही हो। कद-काठी स्यू लाम्बी पतळी ही। जीमण लाग्या तो छोरी रै बाप कयो'कै, रसोई म्हारी बायली री ही बणायोड़ी है। चासणी आळा चावळिया हा, मांय मूगफळी रा गोटा नाख राख्या हा। डालडा स्यूं चौपड्योड़ा चोलड़ा फलका हा। भिण्डी रो सूको साग अर आलू-मटर रो झोळदार साग हो। मूगा री दालती ही।' किरचां रो गूदो-सो छोटियै री राफ्यां तांई आग्यो।

"लेण देण री बात सुरेसियै कै मामै रै साठै ही चलाई। चाळीसेक हजार रै नेड़ै-तेड़ै लगावण री बात होई। म्हूं तो साफ-साफ कह दियो कै, चाळीस तो म्हारै टीकै माय ही, भिवाणी-आळा रामप्रसाद जी देवण नै तैयार है। *अस्सी तांई सारो ब्याव कर देसी। थारली चाळीसेक हजार* फुलडी रो काई करां? हूर म्हे तो साख नापास कर'र आग्या।" मूंडै मे भेळो होयोड़ो किरचां रो कादो सो फरड़कै-स्यूं थूक दियो।

बात खतम होयी जद तांई सूसाट छायोड़ी रही। फेर बूढ़ळी पूछ्यो, "तो अबै?"

"अबै के सूरेसियो बूढो थोड़ी ही होग्यो। के छोरी थोड़ी है, जिको मोड़ो होजिसी। आगलै साल तांई साख देस्यां कर। अस्सी स्यूं नीचो त्यांऊ कोनी। घणी जल्दी है तो बै बैठ्या मामा, म्हूं पालूं कोनी। अबकै तो आपणै सुमनड़ी रो ब्यावड़ो कर द्या। दिल्ली आळा तीज तांई देखण आवण रो कहवायो है। आज तेरस तो होयगी, के जुग है? थोड़ी त्यारी कर ल्यां तो बात वणज्यै।" छोटियै सेठ आपरी बात समझा'र सगळां नै बता दी।

सुमन छोटियै री बडोड़ी बेटी ही। अबै छोटियै री बात में कोर-कसर काढण री हिम्मत किण मांय ही, जिको काई कवै।

त्यार्‌या होवण लागगी। बारलै कमरे मे नयो डिसटम्पर करवायो गयो। बाखल मांय बेकळू रेत बिछायी सारै घर मांय रंग-रोगन अर कळी करवायी। कादै-कीचड़ आळी नाळी साफ करी गई। सूणा सोफा सैट आया अर नूआ टी सैट। स्टील रा बरतन खरीदीज्या। दर्जी बिठायो गयो। पांच सात दिनां ताई आपड़-धापड़ मचावण में कीं—कसर नी छोडी।

सागी दिन देसी घी मांय दाळ रो हलवो घूटण लाग्यो। नास्ते री खातर खुरमाणी, गुलाब जामुन अर बीकानेरी भुजिया, काजू-किसमिस त्यार मेल्या। कई आली-सूकी सबज्यां अर फळा री टोकरी आई।

जद फळसै आगै तीन कारां आ'र रुकी तो छोटियै रा पग धरती पर नी पड़ै हा। पूरो तामझाम सहजो रै सागै हो।

मांह् बड़तांई साहजी पूछ्यो'कै, "आपरै कार खड़ी करण सारू गैरेज कोनी कांई ?"

छोटियो सकपकायो। पण सम्हळ'र बोल्यो' कै, "अबै तांई तो कार ही कोनी ही जद गैरेज को कांई करता। अबकै कार ल्यावण री सला भी है अर गैरेज बणावण री भी।"

"पण बणास्यो कठै ! मकान मांय तो जाग्यां ही कोनी दीसै।" साहजी ओरूं पूछ्यो।

"ओ तूड़ी आळो कोठो तोड़'र बणावांला।" छोटियै फेर पलटो खायो।

कमरै मांय बैठ्या' कै चाय नास्ता री सजावट मेज पर होवण लागगी। देख'र साहजी बोल्या, "पैलां टाबर देखस्यां, चाय फेर पीवाला।"

'टाबर तो दिखावणो ही है, पैली कीं सुसता ल्यो, चाय-पाणी पील्यो, इत्ती के जल्दी है ?" बिचोटियो बात में सारो लगावण खातर बोल्यो।

"जल्दी तो कीं कोनी, पण जिकै काम आया हां, बो पैलै, ओ म्हारो दस्तूर है।" साहजी आपरी बात ऊँची राखी।

"छोरी म्हारी सूअै बरगी है, अभी दिखा देवां।" छोटियो, बिचोटियै नै बठैई बिठा'र मांय गयो।

सारै घर रा गैणा पैरा'र लद-पद कर्योड़ी सुमनड़ी नै बारलै कमरै तांई ल्यार खडी कर दी। छोरी कीं पड्योड़ी ही, होवण आळो सुसरो जाण'र पगां धोक खाई। पण साहजी रै दिमाग तो कार रै गैरेज स्यूं सेठां रो सटंडड़ घूमै हो। चाय रो आधो सो कप लियो अर बो'ई कीं रीतो सो कर'र छोड़ दियो। मिठायां नै हाथ ही नी लगायो। ही ज्यू री ज्यू पड़ी रहि।

छोटियो मांयली बात ताड़ग्यो। बोल्यो, "थांनै साहजी, म्हारी कार अर गैरेज स्यू कांई लेणो-देणो है ? बायली म्हारी सूअै बरगी है। दस तांई पढ़ियोड़ी है। सिलाई, कढाई अर बुणाई मांय चतर है। तीन बड़ा

भाई है। आछो म्हारो खानदान है। ओज्यूं तांई तो दूर-दूर तक साख है। अर सारां'ऊं मोटी बात आ है'कै, रूपीड़ लाख एक तांई देस्यां लगा। बाकी थारी मरजी।"

छोटियै री बात नूटियो सो वोढ़ लियो। साहजी नै खारी लागी। माथै माय झणझणाट सो उठ्यो, "लाख-दो-लाख तो हर म्हीनै म्हारी मील मांय मजूरां रो बोनस ही हो ज्यावै, थे कांई रिपियां रो टरणाट दिखाओ हो? थारी कार'अर गैरेज स्यू तो म्हानै कांई मुतलब नी, पण म्हारै छोरै नै जद-कदेई दो-च्यार दिन ही सासरै रैंवणो पड़ै तो बीरी कार कठै खड़ी रैवै? गळी रा टीगर कार री होरण नै पी-पीं बजावै जद कांई इज्जत होवै? अर थारै मकान मांय गैरेज री जाग्यां ही कोनी, गैरेज कियां बण सकै है? आप म्हारी बात नै गलत नीं समझो।" साहजी साफ-साफ सरकाय दी अर हाथ जोड़; रामा-श्यामा कर'र आपरी कार मांय जा बैठ्या। पल मांर-तांई गळी सूनी होगी।

□

जेठवा-ऊजळी

सावण रो म्हीनो ठंडी-ठंडी हवा चालै। कलायण उमड़-घुमड़'र गाजै। बरखा, बींदणी ज्यूं सिणगार कर'र पीव मिलण री उतावळी में पगळीज्योड़ी मोटी-मोटी छाट्या सा डग भरती भाजै अर कंवळी काया नै जद थकेलो आ ज्यावै तो होळै-होळै ठंडी फुहार सी चालै।

अै फुहारां जद ऊजळी री देह पर पड़ै तो काटा सा चुभै। बिनै, जेठवै बिना बादळ थोथा लागै। डागली चढी बा, बादलां स्यूं बतळावण करै'कै, "जे थानै कठेई जेठवो दीसै तो म्हारी इण हालत स्यूं बीनै ओळखान कराइज्यो अर म्हारो सदेसो देइज्यो'कै, जेठवा! थारै बिना म्हारो एको-एक पल दिनां बराबर बीतै। पख अर बरसा रो तो कोई लेखो ही कोनी। प्रीत री गाठ काचै तागै स्यूं बन्ध्योड़ी हुवै। आ बात मनै थारै स्यूं बिछोड़ो होयां पछै ही ठा पड़ी। जेठवा, ओ सावण रो मेह उफण-उफण'र बरसै। आभै धरती नै भीतर-ताई भिजो नाखी है। पण म्हारी पांती री तो एक ही छांट कोनी बरकी। म्हूं सूकी की सूसी। टोळी स्यूं टळताई हिरणी भी माठी हो ज्यावै। म्हूं तो आखिर नाजुक सी नार हूं। किण विधि जीऊं? म्हारी आंख्या में चकचूधी सी छायोड़ी लागै। थारै सिवा की नी दीसै।"

ऊजळी र डील पर ज्यूं-ज्यूं छाट्या पड़ै, बा मछली ज्यूं तडफै, जाणै'कै बीरै काळजै में होळका जगती हुवै। सहेल्या जद आय'र देखी तो बरसतै मेह में बा डागळै सूती तिलमिलावै ही।

"आओ ए सहेल्यां, मेह में खेलां।" किसनी रै कहते पाण सगळी जणी ऊजळी नै घेर'र खडी होगी।

"मनै ना छेड़ो, म्हूं कोनीं रमू ।" ऊजली सहेळ्यां नै अपूठी हटांवती सी बोली ।

"डावड़ी, तूं क्यू जिन्दगानी नास करै ? वो तनै कदेन रो ही भूल-भालग्यो ।"

"आ बात कोनी हो सकै किसनी । वो मनै नीं भूल सकै अर म्हूं बिनै नी भूल सकू । आ म्हारी जवानी आज जेठवै रै विना सूनी है, जियां'कै, आख्या रै विना काजळ री कोर ।" ऊजळी री बात में तड़फन ही ।

"अरी बावळी, जेठवै स्यू बिछोड़ो होयां बरस बीतग्या । आतो तो आ ज्यांवतो । अबै कोनी आवै । तूं बीनै भूलज्या ।"—किसनी समझावण लागी—"चकवा, चाकर अर चोर रात मै बिछुड़ै, पण दिनूगै आय'र मिल ज्यावै । तेरो जेठवो अबै कोनी आतो लागै ।"

"जे मेरो जेठवो एकर आ ज्यावै तो म्हू बीनै बड़ै जतन स्यू सम्हाळ'र राखस्यू । वो म्हारै काळजै में बस्योड़ो है । म्हारी आंख्या बीरै नेह मे ही'ज डूब्योड़ी रैवै । मनै अणेसो तो इण बात रो है'कै, जेठवो अबै ईं जग मे नी मिल सकै । पण बींरो उणियारो म्हारै स्यू अळगो नी हुवै । म्हूं बो प्यारै प्रीतम नै ही जोंवती फिरूं । क्यू'कै इण तिरलोकी मे म्हारो जीवण-धार जेठवो ही'ज है ।"

ऊजळी री निजरा दूर ताई चलेगी अर बीनै कई घुड़सवार आता दीख्या । मन मे ठाडो हरख होयो । कुम्हळायोड़ो मुखड़ो गुलाब ज्यू खिलग्यो । पलका वेगी-वेगी झपकीजण लागगी । सगळै सरीर मे सरसरी-सी दौड़गी । अग-अंग फड़कण लागग्या । बड़ै कोड स्यू पूछ्यो'कै, "हे सहेल्यो, मनै तो की दीसै ही कोनी, थे ही देखो तो सही'कै, बै कुण आता दीसै ?"

सगली-जणी निजरा पसार'र हथेली की ओट स्यू दूर ताई देख्यो, "बै कई घुड़ सवार आता तो दीसै, पण• बा में तेरो जीवण-जोत जेठवो कोनी दीसै ।" किसनी रो पडूत्तर सुणताई ऊजळी नै मूर्छा आयगी ।

सहेल्यां आपरी ओढणी रै पल्ला स्यू बीनै हवा घालण लागगी । सगळ्यां मे उदासी छागी । ऊजळी री हालत देख'र किसनी रो काळजो

कुळबुळावै हो। ऊजळी रो मूंडो सफा धोळो होग्यो, जाणै डील में लोही रो टपको ही कोनी। हाडां में सुनपात आगी। जाड़ा जुपग्या। आंख्यां पथराइजगी। होठां पर पापड़ी जमगी। काळजो धोकणी ज्यूं धड़कै।

बेलण खड़ी सहेल्यां निरखै ही'कै, ऊजळी होस में आगी अर बरड़ाई, "कोयल री कूक म्हारै काळजै नैं साळै अर म्हारै हिवड़ै में हूक सी उठै'कै, जेठवो कद मिलसी? किसनी, पपैयो जद पिव-पिव बोलै तो म्हारै काळजै में आग सी लाग ज्यावै। अबै तू ही बता'कै म्हूं कांई करूं?"

"जे तूं जेठवै रै बिना पळ भर भी नीं रह सकै तो तूं जेठवै री राजधानी जा अर बीनैं आपरी हालत दिखा। ईंयां घुट-घुट'र मर ज्याणै में सार कोनी।" किसनी री बात स्यूं ऊजळी रै घावां पर लेप सो लागग्यो।

तीज रै मेळै रो उळावो लेय'र ऊजळी आपरी सहेल्यां रै सागै घर स्यूं निसरगी अर सीधी जेठवै रै महलां पूंचगी।

महलां में राजसी ठाट-बाट देख'र उणरै मन में कंपकपी सी छूटगी। वै दिन अर औ ठाट। ऊजळी नैं जेठवै रै रमत-आळा एकूएक दिन चितराम ज्यूं सामै आयग्या। ऊजळी, अनमनी सी खड़ी जेठवै खानी देख बोकरी।

ऊजळी नै देखताई जेठवा राणोजी इचरज कर्‌यो'कै, ऊजळी, तूं अठै कियां?"

"थारा दरसण खातर म्हूं अठै आई। थारै बिना सगळो जग सूनो है।" ऊजळी सिसकारो भर'र बोली।

"ऊजळी तूं गैली होगी लागै। तू चारणी अर म्हूं रजपूत। आपणो मेळ कोनी हो सकै।" जेठवै रो मन भारी होग्यो।

"थे जिण वीणा रै तारां में राग छेडी, बै तार अबै म्हारै बस में कोनी। म्हारै मन में जिणस्यूं लगाव हो चुक्यो, म्हूं बीनैं भूल नीं सकूं। म्हूं थांरै गुणां नैं रोऊं, जात नैं नीं। थारै खनैं जात-पांत रै सिवा और कांई कारण है?" ऊजळी री आख्यां डबडबाइजगी।

"ऊजळी, म्हूं समाज रो सामनो करण में समरथ कोनी। अठै री रीत-नीत नै तोड़न री म्हारी हिम्मत कोनी।" जेठवै निजरां झुकाय ली। बीरै काळजै माय भी लाय लाग री ही, पण राजपूत, चारणां नै बडेरा मानै। बारा टाबर आपस मे भैण-भाई रै सिवा की नातो नीं राख सकै। इसै नाजुक नातै नै तोड़न री कर'र वो आपरै मुंडै माथै काळस नी पोतणो चावै। बण मजबूरी रै आगै हाथ पसार दिया।

"वीर जोद्धा तो डावडी सारू बड़ा-बड़ा जुद्ध करै। पण थे, म्हारै सारू कीं नी कर सको? जेठवा! थे मनै अकूत समुन्दर रै अधविचाळै छोड़ी है। थारै बिना जद एक घड़ी बीतणी ओखी लागै तो ओ जलम कियां बीतसी?"

"ऊजळी, तू पूठी घरे चलीज्या अर आपरो घर बसा। म्हूं बेबस हूं। लारली सगळी बाता भूल ज्या। जिकी गलती हो चुकी बींनै याद राखणी आछी बात कोनी। गलती माथै धूड़ नाखणो ही श्याणपत है।"

"म्हारै काळजै माय अंगारा धधकै। जद थारै स्यूं ही मन लाग्यो तो मन भावतो और कुण मिल सकै! जेठवा, थे मनै आभै तांई उठा'र पताळ मे पटकी है।" ऊजळी री आंख्या स्यू चौसरा चाल पड्या। जेठवै सिर पळूसण नै हाथ बढ़ायो तो बण रिसाणी होय'र झाटक दियो। सिसकिया स्यू घिग्घी बधगी। मन बीती बातां में उळझग्यो। काळजै में टीस उठण लागगी। सै मर्द एक सा। भंवरै ज्यूं कळी नै चूस'र उड़ ज्यावै। जिण देह-मिलन रो पळ याद कर-कर'र बा मीठै सुपनै-सो स्वाद लेंवती, अबै काटै ज्यू चुभै।

ऊजळी अपूठी आपरी सहेल्या मे आय'र मिलगी। जद किसनी जेठवै री बात पूछी तो ऊजळी सिसकारो नाख'र बोली, "नुगरा किसा नेह, जेठी राणा बोल्या नही।" ऊजळी री आख्यां स्यू उफळती बूदा टपकण लागगी। पिनल्योडै काजळ री लकीरां गाला माथै पसरगी।"

समझायां समझै, तो कोई समझावै। किसनी आपरै बूतै स्यूं वत्ती अकल अजमाय'र थकगी। इं रोग रो कोई इलाज कीनै ही नी दीसै हो।

ऊजळी दिन-दिन दूबळी होती गई अर सूख र कांटो ज्यूं होगी। बेटी री अ हालत बूढ़े बारहठ जी स्यूं देखणी ओखी होगी। करै तो करै कांई? बाप अर बेटी रै बीच लाज रो पड़दो हुवै। पण, पळ-पळ तड़फती बेटी नै कुण बाप देख सकै? बारहठ जी रो हिवड़ो हाल उठ्यो। आख्या डबडबा-इजगी। मा-बारी एकलड़ी बेटी री सुध राखणी। मा अर बाप रो फर्ज निभाणो। बुढ़ापै स्यू कमर तो पैलै ही टूट चुकी ही। धनमाल नै रूखाळ्यो जा सकै, पण जवानी नै कियां रूखाळीजै? चारयूं-मेर फैल्योड़ी बात नै जाण'र भी कुण ऊजळी स्यू हथळेओ जोडै? एक पाकी उमर रै छोरै नै देख'र बारहठ जी ऊजळी नै परनावण री सोची। पण ऊजळी ने पूछे बिना की कोनी करणो चावै हा। वां किसनी नै भेज'र ऊजळी र मन री बात जाणनी चाही। किसनी तो पैलां ही सारी बात री जाणीजाण ही। एकर ओरूं जा पूछी तो ऊजळी रूआंसी होय'र बोली, "म्हारै मन री कुण जाणसी? किसनी, म्हारै हिवड़ै री कोई नी जाण सकै। रो-रो'र आंख्यां सुजाए ऊजळी मरणो मांड राख्यो हो।

किसनी समझावण दी' कै, "ऊजळी, तूं कैणो मान, सो क्यू ठीक हो ज्यासी। जद घर बस ज्यावैलो तो धीरे-धीरे जेठवै नै भी भूल ज्यावैली।

"जेठवै नै कियां भूल सकू हूं। बै तो म्हां स्यूं सपना मे ही कोनी भूलीजै। आखी रात बारी याद में रोंवता कटै अर जे कदास आख लाग ज्यावै तो बांस्यूं ही भेटा हो ज्यावै! सपनै मे मिलन रै आनन्द स्यू हळा-डोळ होय'र जद अंगूठै री आल स्यू धरती कुचरूं तो म्हारी नीद उचट ज्यावै अर ओरूं रोंवता ही भाग-फाटै।"

बेटी तो सासरै मे ही फाबै। बारहठ जी, बीजो कोई उपाय न देख ऊजळी नै परणाय दी। लाडां-कोडां पाळ्योड़ी बेटी अधबूढ़ मोट्यार नै सौंपता बारहठ जी रो हिवड़ो घणोई काप्यो। धोळो दाड़ी आसुआं स्यू भीजगी। पण, विध रै विधान आगै किरी मजाल? लिलाड़ रो लिख्यो कुण टाळ सकै?

ऊजळी सासरै जांवती किसनी स्यूं गळबांथ घाल'र झार-झार रोई, "रिस्ता नाता तो सगळै संसार ने दीसै, पण किसनी, जलम-जलम रो

भरतार किनै ही तो हुर जलम में सांगू-पांग मिल बोकरै, जाणै हाथ पकड़'र *गंगा न्हाया हा* अर किनै ही जलम-जलम तरसणो पड़ै । ओ तो पूरबला जलमा रो फळ है । बापू जी आपरो फरज निभाय दियो, आगै म्हारी तकदीर। डूंगरां बळती तो सगळां नै ही दीसै, पण पगां बळती किनैं नीं दीसै। तू के जाणै कोनी' कै, म्हूं इण उणिहारै री जोड़ायत कोनी। मनै लागै कै, म्हारी जोड़ी रो मोट्यार जलम्यो ही कोनी। म्हूं नाजुकड़ी नार जेठवै नै झूरती ही रैगी अर वेमाता म्हारी तकदीर आ सूडा स्यूं भर दी।"

ऊजळी रो डील, डोली में चढ़'र व्हीर होग्यो अर मन जेठवै खनै भतूळियै ज्यूं भभूळा खावै। सुहागणी सेज कांटा ज्यूं चुभै।

सासरै स्यू आयोड़ी ऊजळी नैं जद सहेल्यां सासरै री बात्यां पूछी; तो ऊजळी रो रूं-रू रो पड्यो। बा उसांसां भरती बोली' कै, "किसनी, बालां नै बूढ़ां सागै खेलणो खारो लागै। बिना जोड़ी रै भरतार स्यू मन रो मिलन नी हो सकै। जद मोकळो जळ हो तो, जी धाप'र नी पियीज्यो अर अबै गंदळै जळ स्यू कियां तिरपत होइजै ?"

ऊजळी, जेठवै रै सागै बिताया दिनां नै याद कर'र पछतावै' कै, "पावासर रै तट माथै बैठ'र म्हूं हंसा भेळी नी हुय सकी तो अबै बुगलां रै साथै बैठ'र तो आपरी जूण ही गमाणी है।"

बींनै धूजणी छूटगी। आंख्यां आगै तिरवाळा-सा आग्या अर बा निढाळ होय'र ढोलियै माथै पसरगी। बोलण री सक्ती खतम होयगी। ऊजळी री हालत देख'र किसनी रो काळजो मुंडै नैं आवै, "ऊजळी, हिम्मत राख डावड़ी, इंया आ उमर किया बीत सी ? जिको कीं करतार दियो है, बीमैं ही मन रमा।" किसनी री आख्या भी टपकण लागगी।

"अण करतार, म्हानै बालम स्यूं बिछोड़ो ही तो दियो है ? मिनख जमारो भी दियो तो रो-रो'र पूरो करण सारू ही दियो। इण स्यू तो जे करतार म्हारी जूण ही पळट'र पंछी बणाय देवै तो'ई आछो। किसनी, तूं ही बता, जण पावासर रो पाणी पीयो हुवै, बा गड्ढा रो गंदळो जळ पीय'र कियां तिरपत हो सकै ? म्हारै पुरजोर जोबन रो मांणीगर तो मिलियो नीं, इण स्यू तो हे किसनी, जोगण होणो ही आछो।"

अर आखर एक दिन हतास होयोड़ी ऊजळी जोगण बण ज्यावै। धोळा वस्तर धारण कर जोगण होयोड़ी ऊजळी हरदम माळा हाथ में लिए जग मे फिरती फिरै। पण जेठवै नै नी भूल सकै।

"जेठवा ! आवै री डाल ऊची है अर भूई पड्यो मनै भावै कोनी। इणस्यू म्हूं, जोगण बण'र चन्दन री माळा हाथ लेय'र तनै ही जपती फिरू। जिया तन, धन, जोबन जायसी; बिया ही ओ जमारो भी जायसी। पण हे जेठवा ! तू प्रीत लगा'र मनै जोगण बणायग्यो। म्हू हार'र जद हियो ही तज दियो तो तेरै लिये ओ तन तजणो कांई भारी है ? तू ईं जलम में तो म्हानै नी मिलियो, पण आगलै जलम मे मिलन री आस मे म्हूं ओ जमारो काट देस्यू।"

देखी जूणा दोय, नार-पुरख भेळा निपट।
कहसी बाता कोय, जोग-तणी जी जेठवा॥

□

मा-जाया

पूणिमा ! सुण पिकी, म्हारै काळजै में आज बळत लाग रो है । पण थू तो अठै स्यू घोहळी दूर बैठी है । म्हैं किण सागै बात करूं ? जिका अकेला बरड़ावै वै पागल गिणीजै । म्हैं 'ई पगळीजग्यो लागू'''आजरै दिन म्हूं साच्यांणी पगळीज जास्यू । म्हैं साची कैवू भैण, आज रै दिन म्हारो काळजो धुखण लाग ज्यावै ।

थनै आछी तरियां ठा है' कै, म्हनै थारै सागै कितरो सनेव है । म्हारै जलम रै आठ बरसा पछै थारो जलम हुयो । इण पैली जद म्हू जद भैणा नै आपरै भाइया रै पुणचां में राखी बांधती देखतो तो म्हारो मन दुखी हुय ज्यांवतो । कई बार तो इतरो अणेसो आवतो कै नेणा मे चोमरा चाल ज्यांवता । म्हैं भगवान री थेळी माथै आपरो मायो रगड़तो अर कैंवतो, "बस एक भैण देय दे दीनदयाल ।

थारो जलम सागण सावणी पूनम रै दिन हुयो हो । म्हैं बजार स्यूं राखी ल्यायो, थारै नैन्है-नैन्है हाथां रो बोरै परस करायो अर मा कनै हाथ रै बधवायली । म्हारै मन में की शान्ती बापरी । म्हैं खुशी में सगळै बास मे नाचतो फिर्‌यो । लोग कैंवण लाग्या, पकज पगळीजग्यो है । साच्याणी पिकी, म्हैं राखी-आळै दिन साचैली पगळीज ज्याऊं । वो बखत म्हारो जीव बस मे नी रवै ।

घर में टाबर, आपां भैण-भाई दो जणा ही हा । इण कारण घणै लाडां कोडां मोटा होया । म्हूं एम. ए., बी. एड., करी उठा ताई बाईस बरस रो हुयग्यो हो । थूं चवदै बरस री ही अर दसवीं में आयगी ही ।

'''म्हारो गळो क्यू सूख रयो है ?'''सन्तो ! ऐ सन्तो ! एक गिलास पाणी तो लाव ।

अबै थू' ई वता पिंकी' कै, म्हैं कांई करतो ? एक कानी तो म्हारा प्रगतिशील विचार अर दूजी कानी पिताजी रा दकियानूसी विचार। म्हैं दायजै रै सख्त खिलाफ अर वै दायजै रा पक्का हिमायती। म्हारै ब्याव में आयो दायजो थनै देयनै काम निपटावणो चांवता। वांरी मानना ही— लेवणा जिसा देवणा। पण म्हनै आ जंची कोनी।

पिंकी, जिण भांत थू म्हारी मा-जायी भैण है, उणी'ज भांत सन्नो भी तो कोई री मां-जायी भैण है। थैं' ई तो म्हनै कयो हो' कै, स्वर्णलता थारी सायण है, सूणी, चतुर अर पढी लिखी है। पण वीं रै घर री हालत दायजो देवणजोग कोनी।

···आज बार-बार म्हारो गळो क्यूं सूख रयो है ? बारै तो बरसात री झड़ी लागरी है, ठंड है, पण म्हारो कंठ क्यूं सूखै ? ऐ सन्नो, एक गिलास पाणी तो ल्या।

पिताजी रै नाराजगी रो कारण सही हो'कै गलत ? अबै थनैं कांई समझाऊं पिंकी ! दायजो लेवणो अर दायजो देवणो; म्हारी निजर में तो दोनूं काम गलत हा।···म्हैं कितरो पगळीजग्यो हूं'कै अबै तेरह बरस बीतां पछै थनैं बात समझावण नै बैठो हूं।

अबै म्हनै इण बात रो अंगाई दुख कोनी' कै म्हैं धक्का देय'र घर स्यू बारै काढीज्यो, म्हारो सामान गळी मे बारै फैंकीज्यो। म्हैं, म्हारी नुंवी परणेत्तर सागै गळी में बिखरयोड़ो सामान भेळो करै हो अर गळी री लोग लुगाई ऊभा तमासो देखै हा अर हंसता जावै हा। म्हारी आंख्यां स्यूं चोधारा चालै हा, जिण भांत आज औ बादळ झाझरकै स्यूं' ई अरड़ायता थकां चौसारा टपकावण लाग र्‌या है। म्हनै लागै'कै यांनैं' ही यारै बापू म्हारै ज्यूं सगळां रै सामी घर बारै धकेल दिया है।

पिंकी लारलै तेरह बरसां स्यूं म्हैं बकट बणाय'र घर रो खरचो। छतापण आज तांई म्हूं आपरो ऊनी कोट भी बणवाय सक्यो। इण बात स्यूं अणजाण कोनीं। जद'ई तो थैं कदै'ई राखी माईजी नेग कठै स्यूं देसी ?

थनैं याद है पिंकी, म्हैं हर

नेग चुकाया करतो अर यू वै सगळा पैसा जमा कर रखण खातर पिताजी नै सूप देवती ।

पण म्हारै मन में आ बात बिल्कुल नी बैठै' कै म्हारी भैण म्हारै सागै हस्योड़ी है । हां, म्हूं पिताजी रै क्रोध नैं आछी तरियां ओळखू । म्हारै सागै सागै लारलै तेरह बरसां स्यूं वांरो अणबोलणो चालै । आ बात अबै म्हनै सोळू आना साची लागै कै उणां'ईज थनैं राखी कोनी भेजण दी ।

मेह थमग्यो लागै । सन्नो हाल तांई पाणी कोनी ल्याई । सन्नो, ऐ सन्नो ! एक गिलास पाणी तो लाव ।

पिताजी री रीस कितरी जबरी है, इणरो थनैं अनुमान कोनी । लारला तेरह बरसा में म्हैं कई बार वांरैं आगै धोक दीवी, कयो म्हनै माफी देय द्यो। पण वै टस स्यू मस नीं हुया । मा री मौत रा समाचार सुण'र म्हूं भींत स्यू भचीड़ खाय लियो । म्हैं बीरो एकलड़ो मोबी बेटो अर वा परायां रै खाधै चढनै गई । म्हैं तीजै दिन पूग्यो । रोयो, झोक्यो, नाक रगड़्यो पण पिताजी बोल्या कोनी । थनैं ई मिळण नीं दियो अर दरवाजै स्यू भगाय दियो ।

पिंकी थनैं म्हारै काळजै री कूक सुणीजै कांई ? म्हैं भूखो-तिस्यो' ई पाछो आयग्यो । साची कैऊ पिंकी' कै, म्है मन में मान लियो' क मा रै सागै म्हारो बाप' ई मरग्यो । जदे' ई तो थारै ब्याव में नी तो म्हनै बुलायो अर नीं म्हैं आयो ।

जद स्कूल री छुट्टियां हुय ज्यावै अर सगळा साथी आप-आपरै घरा बुआ ज्यावै तो म्हैं एकलो गांव री गळिया में जावतो इण वास्तै डरूं' कै कठैई कोई म्हनै ओ सवाल नीं पूछलै' कै, मास्टर जी थैं गांव कोनी गया ? तो म्है कांई पड़ूत्तर देस्यू ?…इण सवाल स्यू डरतो तो म्हैं घर री पैड़ी' ई कोनीं लाघू अर खासकर राखड़ी पूनम रै दिन तो भूलनैं' ई नी । दूजा पुणचां माथै चमाचम करतोड़ी राखियां देखू तो म्हारो काळजो बळण लाग ज्यावै । म्हारा हाथ पैन्ट री जेबा में चल्या ज्यावै । वां नैं आपरी उघाड़ी तकदीर माथै सरम आवै ।

यू इण पुणचां माथै कितरी फूटरी-फूटरी राखियां बांध्या करती । एकर तो थू सगळां सूं मूघी राखी ल्याई ही पांच रिपियां में एक ।

पिताजी देख'र थां माथै कितरा नाराज हुया। एकर थैं म्हारै हाथ रै, आपरै हाथां बणायोड़ी गोटा-किनारी आळी राखी बाधी ही। थूं कह्या करती' कै थारी भाभी रै वास्तै थूं लूम्बी बणासी। पण थूं भाभी री चूड़िया मे लूवी नी बाध सकी। सन्नो नै थै'ई पसन्द करी ही।

आज बार-बार म्हारो कंठ क्यूं सूकै ? पिंकी ! थू थारै पसन्द री भाभी ल्याई पण म्हैं कितरो निरभागी हूं' कै, म्हारै बहनोई री पसन्दगी में भाग नी ले सक्यो।

आ बात कोनी भैण' कै म्हैं पिताजी सागै राजीपै री कोशिश नी करी होवै। म्हैं घणी' ई मिण्णत करी, पण वै तो म्हारा कागद विना बांच्यां' ई फैंक देंवता। जाणैं म्हैं गौहत्या जिसो महान अपराध कियो हुवै।

पिंकी, म्हारी लाडेसर भैण ! म्हैं थारै वास्तै एक स्यूं एक आला अर टाळवां छोरा देख्या दूजां रै मारफत पिताजी नैं वताया, पण वां तो म्हारी पसंद माथै नटणो ही आपरो बड़ापणो मान्यो। दिनेश म्हारै सागै' ई वरिष्ठ शिक्षक अर उत्तम विचारां रो आलै दरजै रो मोट्यार। म्हारै एक साथी रै बहनोई रो नैंनो भाई वकालत करै, प्रगतिशील विचारां रो जवान। दायजै री प्रथा रो विरोध करणियां, इण भांत कई छोरा बताया पण पिताजी तो नटता' ई गया। इण स्यूं छेकड़ जद थूं सताईस बरस री हुयगी तो थारो ब्याव हुयो।

आ घणै शरम री बात है' कै, भाई तो बाईसवै बरस मे आपरो घर वसाय लेवै अर भैण सत्ताईस बरस ताई कुंवारी फिरै। पण म्हूं कांई जोर करतो। ओ सै पिताजी रै थोथै अहं रो नतीजो हो।

...एक तो, वै दायजै जिसी सूगली प्रथा स्यूं आपरो लारो नी छुड़ा सक्या अर दूजो, छोरो ढूंढती बखत इण बात रो ध्यान राख्यो' कै, बीं रै ऊपर री कमाई कित्ती'क है ? अबै जावता नगरपालिका रो चूंगी बाबू लाध्यो बां नै। म्हैं तो हाल निजरा देख' ई कोनीं सक्यो। लारली मई में ब्याव होयो सुण्यो।

(खटपट री आवाज !)

कुण होसी ?......डाकियो ?......आ भाई लाव...कांई ल्यायो है ?

''''''बैरंग !'''अरे इणमें तो राखी है ! पिको !'''पिकी रो कागद ! सन्नो, ऐ सन्नो ! देखतो सही'''देख'''आपणै राखी आई है।'' म्हारी भैण राखी भेजी है।'''तीस पैसा ?'''बैरंग रा तीस पैसा कांई'''अरे थू तो पांच रिपिया लेयजा'''पांच रिपिया'''म्हारी भैण पूरा तेरह बरसां पछै म्हारै वास्तै राखी भेजी है !'''सन्नो, गुल्लक लाव'''आज तेरह बरसां रो भेळो हुयोड़ो गुल्लक तोड़ां।'''सुणो-सुणो'''सगळा सुणो ! आज म्हारै भैण री भेज्योडी राखी आयी है। सन्नो म्हैं पगळीजग्यो लागूं। अबै म्हारो कंठ कोनी सूकै । अबै पाणी मत लाइजै। देख'''आ देख !''' राखी !'''म्हारी मा-जायी भैण म्हारै वास्तै राखी भेजी है।

चलेवो

म्हूं 'बेड-टी' रो कप हाथ में लियो ई हो' क, कन्हैयालाल हेलो पाड़ लियो। दिमाग में भतूळियो सो उठ्यो, आज दिनूगै ई कियां ? किगो-न-किगो सख बजग्यो लागै। कन्हैयालाल री गांव में ओ खास धन्धो हो। नाम कढाण नै, फेरा कराण नै, अर पूजा-पाठ कराण नै तो लोग बांनै कम ई ले ज्यांवता, पण चलेवै रै आंगै-आगै संख बजावणो अर उठावणी सू उढावणी ताई रा सगळा किरिया-करम, पंडित कन्हैयालाल जी ई' ज करांवता।

म्हारै सागै आछी उठ-बैठ ही, इण वास्तै बै बे-रोक-टोक मांयली साळ तांई आ ज्यावता। म्हारै ढोलियै तांई पूगता-पूगता बतायो'क, "पंडित जगदम्बा प्रमाद रामशरण होग्या।"

"कद ?"

"रात नै आठेक बजे सी' क।"

"रात नै ई क्यूं कोनी बतायो ? रात कटावतो !"

"काई करता थानै फोड़ा घाल'र म्हे घणाई हा। म्हू हो, चेतराम हो, मांगियो हो, सदु-आळो बिरजियो हो, पतराम हो अर घणकरा अडोसी-पड़ोसी हा।

म्हूं चाय रो प्यालो तिपाई पर मेल दियो अर कन्हैयालाल रै सागै व्हीर होग्यो।

पंडित जगदम्बाप्रसाद, आछा मांन्या-तान्या अर भणीजा-गुणीजा विद्वान हा। इत्ता घणा भणीज-गुणीजग्या हा' क, ब्याव सू लागगी। टाबरपणै सू लेय'र बुढापै तांई बिरमचारी ई रैया

में अँ सगळाऊं छोटा हा अर बिचोटियँ भाई रैं सागँ रैंवता। जद कद तीयाँ निकळ ज्यावता। लारलै दो-ढाई बरसां सू गठिया में खटिया भोगँ हा।

बाखळ में मिनखां री भीड़ अर आंगणे में लुगायां री। चलेवैं री पूरी त्यारी ही। चेतराम अर बिरजियो स्हास नैं न्हुवावण री त्यारी करैं हा। कन्हैयालाल ई नेड़ै जा पूच्यो। लुगायां आळै पासै माची खड़ी कर'र पाणी रो लोटो भर्यो ई हो' क, एक भाटो आय'र माची रै पागै सू आ लाग्यो, बिड़ि्न् न् ऽ ऽ···। बड़ीड़ सुण'र सगळां री निजरां ऊची नै उठी। सारलै घर री छात पर बडोड़ै भाई रामप्रसाद रा पाचू पोता आपरी मां री अगवाणी में हाथां में भाटा लियें ऊभा हा। कैया करैं' क, कुमत आवै जद कांदा बावैं।

सवालिया निजरां रो पड़ूत्तर देवती वा मर्दानी लुगाई बोली, "जद ताई आं री जायदाद रो बंटवारो नीं हुसी, अर्थी नैं उठण नी देवा।" ओछै पाणी री ओछी अकल हुवैं।

"अँ कांई जायदाद सागँ लै ज्यावैला ?" चेतराम पूछियो।

"सागँ तो कोई कोनी लेग्यो, अँ कांई ले ज्यावैला।"

"जद इत्तो ग्यान ऊकळै है, तो नीचैं आय'र उठावणी में भेळा होवो। सत्तर साल रो थारो काकेमरो सुरग सिधार्यो है पोता री डंडोत करावो अर ई रैं लारैं बारैं दिनां तांई की धान खिडावो। वारैं पछैं बाट लेया जायदाद, कुण पालै !"

"औसर चूक्यां मौसर कठै ? फेर कुण हाथ लगावण देवैं म्हानैं ? देवण-लेवण नै रामजी रो नाव है। म्हैं तो आज ई लेस्यां अर अबार ई लेस्या।" बुढापैं में केस बदळै, लक्खण नीं, वण आपरो फैंसलो सुणाय दियो।

बाखळ मे खळबळी माचगी। कोई भाज'र सरपंच नैं बुलावण चले-ग्यो। घड़ी अजूबी बात ही। आज तांई इसी बात नीं तो कणी सुणी ही अर नीं कणी देखी। कैया करैं' क, मांगतोड़ा ई अर्थी, नीं पकड़ै। पण सरीको माड़ो हुवैं सा, बेटी तो परणैं कोनी अर बाकी की छोड़ै कोनी।

बडोड़ै भाई रामप्रसाद रै दो बेटा हा, हरिशंकर अर गोरीशंकर छोटो हो। औलाद ही कोनी अर जोड़ायत रोज-रोज री कळह सूं आखती होय'र कूवोफांसी कर लीं। अद पछै बो आपरा घर-जमीन बडोड़ै भाई हरिशकर नै ऊणा-पूणा मे वेचबाच'र नक्की कर्‌या अर फक्कड़ होग्यो। जिकै दरवाजै की मिल ज्यै, पेट-लिवाड़ी कर ल्यै अर बी पोळ में ई मोढ ज्यै।

हरिशंकर कीं काजबीज आदमी हो, कमायो, अर घणो' ई कमायो। छेकड़ मोटोड़ी बिमारी में आगणै पसरग्यो। आंख मीचता पाण, ऊनणी रा ऊत, ईस्या निकळ्या'क सात-आठ बरसा रै मांय-मांय सो क्यूं बिलै लगाय दियो। मिली कमाई जायदाद मे खाली ओ घर बच्यो है, जिकै री छात पर, हाथां मे दो-दो भाटा लिये ऊभा है।

सरपंच आयग्यो। सगळो माजरो देख'र समझावणी दी, "क्यूं आगला लारलां रो नाम काढो हो? आं टाबरां नै कोई आछी सीख देवो। जिकै सूं अै कमावै-खावै। भाटा फैंक द्‌यो लाडी!"

साहजी री सीख फळसै तांई। मा खनै सूं कान मे बात घला'र कमलियै, मूंडै माखर काढ दी, "ताऊजी! पैली म्हानै आं खनै सूं दादै आळी जायदाद रो हिसाब-किताब दिरवा द्‌यों'क, बैंक में दादै रा कित्ता जमा है, घर में कित्ता है अर और कांई-कांई माल-मत्तो पड़ियो है? फेर भाटा फैंकस्यां।" भाग्योड़ै लाडू मे सगळां रो सीर।

"हथेळ्यां में सरस्यूं नीं पाके करै लाडी, थे नीचा आओ; दादै रै दाग मे भेळा होवो, औसर पछै सो पधूं हो ज्यासी। बगत माथै ई सगळा काम आछा लागै।"

कयै कुम्हार गधै नी चढ़ै। कमलियो बोल्यो, "म्हे तो अब लेस्यां अब।"

"तो लेल्यो लाडी, ठार'र खाया। झगडो अर हेत बधावै जितोई बधै। चेतराम! अै इयां नी मानै। अकल सरीरां ऊपजै, दिया आवै डाम। तू राजासर-थाणै जाय'र पुलिस लिया। म्हूं वांनै फोन करूं।"

सरपच रो कैवणो मान'र चेतराम आप री जीप मंगाय ली। म्हनै

अर कन्हैयालाल नै सागै लेय'र राजासर खानी व्हीर होग्यो। गरज नी चावै जका काम ई कराय देवै ।

आठ मील अळगै थाणै तांई पूगता जीप नै कांई जेज लागै ही । पण म्हे पूग्या जद तांई थाणै मे दो वार टेलीफून री घंटी टणटणाय चुकी ही। एक सरांच री अर एकर गाव रै फदड़पंचरी।

'छोटियो अर बडोड़ो, दोनूं ई थाणेदार छुट्टी पर। हवलदार होशियार सिंह जी, हवा मे डडो हिला'र बोल्या, "म्हूं तो हवालदार हूं भाई तफ़तीस रा पावर म्हा खनै तो है कोनी इण वास्तै म्हूं तो की नी कर सकू।"

सुण'र म्हे सुन्न सा होग्या। सोच्यो हो अबार भाज'र थाणो बुला ल्यावाला। पण अठै तो आगळी ई कोनी टेकण देवै।"

चेतराम बोल्यो, "ईया नी करो सा! आगणै में ल्हास पसर्योड़ी पड़ी है। दाग दियां बिना पाणी ई नीं पी सका। आपरी सेवा-देवा मे को कसर नी पड़न देवाला।"

'पण म्हूं जा किया सकू हूं ?'

"म्हारै माथै जीप माथै, "भोळो सो बण'र चेतराम बोल्यो, "दाग लागतै-पाण, जीप स्यू ई'ज अपूठा छोड़ जावांला।"

"डोकरी नै पापड़ बंटणा काई सिखावै? आ बात नीं है। म्हूं जा नीं सकू। म्हानै पावर नी है, भाई।"

"कियाई करो-सा, आपनै ओ पुन रो काम तो करणो'ईज पडसी।" कन्हैयालाल आपरी सफाई लगाई।

"थे एक काम करो," हवालदार जी नै तरकीब सूझी, "थे नारायणगढ रै थाणै जाओ परा। म्हारो मुशी थारै सागै चल्यो जिसी। बठै रा थाणेदार जी नै सगळी बात समझा'र बता देया। बै जियां कियां करणै रो कैवैला, म्हूं वियां ई कर देऊंला।"

आगो दिया पाछो पड़ै। म्हे टेलीफून कर'र सरपच सू बात करी। मुशी जी नै सागै लेयर जीप नारायणगढ़ कानी मुड़गी।

बिचोटिये भाई हनुमान प्रसाद रै एक ई बेटो गगाधर। गगाधर पटवारी हो, जमीन-जायदाद मे धाप'र बधेपो कर्यो। छव छोरियां पछै

एक छोरो होयो, नत्थु । नत्थु दो बरसां रो ई होयो हो'क, गंगाधर री पीठ मे छिपकली ऊपड़ी के'र वो हड़क-फड़क राम नै प्यारो होग्यो । लार रोंवती-कळपती गोमती नै काकेसरै रै सिवा किणो' ई सरणो नी हो । नथियै नै दादै री झोळी मे न्हाख'र गोमती, जगदम्बाप्रसाद रा पग झाल लिया । बो दिन अर काल आळी रात, लारलै दस बरसां मे वां छऊ छोरियां परणाय दी खेता रा खळा सालू-साल उपणता ई आवता ।

जीप ठाम'र थाणै रै माय बड़िया तो सामलो सीन देख'र काळजो कांप उठ्यो । एक मिनख नैं मूदो रेड़ नाख्यो हो । एक सिपाही नस नै दाब राखी ही अर एक पगा पर पालकी मारै बैठ्यो हो । तीजो सूकै खल्लै स्यू पगथळी कूटै हो अर चौथो कोरडै सूं चूतड़ । कूटीजणियों इस्यो गरळावै हो' क, जिकां रो काळजो भाठो ई हुवै तो भी पीघल्यां सरै । मिनख री जोड़ायत, आपरै धणी नै छुड़ावण सारू थाणेदार जी रा पग झाल राख्या हा । पण ठाकर सा ठाठ सू चाय रै साथै बरफी नीगळै हा । बण गळ टेबटो काढ'र मेज माथै राख दियो । सिपाही पासै हटग्या । लुगाई आपरै धणी नै मोडै रो सारो देयर थाणै सू बारै लेयगी । म्हारी आख्या आगै अंधेरो सो आयग्यो ।

मुंशी जी, म्हारली बात थाणेदार जी आगै राखी । चेतराम आछी तरियां समझाय दी । सुण-समझ'र थाणेदार जी फरमायो, "इणमे पुलिस काइ कर सकै ?"

'तो कुण करसी ?" म्हूं पूछियो ।

"नाजम साहब आर्डर देसी, जद पुलिस जासी ।"

म्हारी घिग्घी तो थाणै रै माय वडताई वधगी ही । अबै बोलै कुण ? कन्हैयालाल गिड़गिडायो, "देखो थाणेदार जी, दिनूगै सू म्हे नी तो की खायो है, नी की पीयो है । आंगणै मे ल्हास पडी है, वाखळ मे वास भेळो हो र्‌यो है अर डागळै खड्या सरीकी काख बजावै है । थे म्हारी मदद करो । किया'-न-किया आंगणै सू उठावणी उठवा द्यो । आप कैवोला ज्यू ही सेवा-देवा कर देवांला ।"

"गाडी तो चइलै-चइलै ई चाल्या करै । म्हूं थानै ठीक कैवू हू' क,

कानून रै मुजब मजिस्ट्रेट रे ऑर्डर बिना पुलिस की नी कर सकै। आपनै सतारानगर जावणो ई पड़ैला। थाणेदार जी आपरी मूंछ्या रै बट चढावै हा अर म्हे बांरै मूडै खानी जोवै हा।

आगे दियां पग पाछो पड़ै। पण पूठा मुड़ां तो मुडां कियां? जद दादै री ल्हास खनै बैठ्यो, भद्दर होयोड़ो बारै बरसां रो नथियो, आख्यां रै सामनै आ ज्यावै तो पाछो मुडीजै ई कियां? आप री अवखाया भुला'र छेकड़ जीप सतारानगर खानी मोड़नी पड़ी। मुंशी जी नै आपरै काम सू बठै ताई ई आंवणो हो।

तपत पडन लागगी। दोफारै रा इग्यारा बजण आळा हा। म्हारो तिस मरतां रो तळवो सूकण लागग्यो। बिना दाग दियै बिना पाणी पीवण रो धरम कोनी। अर जे पी भी लेवां तो धरम-धुरन्धर पंडित कन्हैयालाल जी सागै हा, किया पी सकै हा। काळजै मे उठ्योड़ी भभक माय ही माय दबोस ली। होठा पर जीभ फेरण रै सिवा कर ही कांई सकै हा।

"आज तो आछा फंग्या।" म्हारै मूडै सू सिसकारो निसरग्यो। फमी रा फटकण ई तो बाजै हा।

चेतराम जीप रो स्टेअरिंग डावै पासै घुमावतो बोल्यो, "अण पंडितियै फंसाया आपां नै। म्हानै तो गंगानगर जावणो हो अर आय फंस्या अठीनै।

"ये किसा पडित कोनी?" कन्हैयालाल आपरी सफाई देंवतो बोल्यो, "अर आपां तीनू पडित ही जद घर स्यू नीसर्या जदेई तो अै फोडा पड़न लाग र्या है। नी तो काम कोनी सरज्यावतो।

"तो तू पैली आ बात क्यू कोनी बताई? आपां एक-दो नै और सागै ले-लेवतां।" चेतराम जीप नै तेज कर दी।

कई ताळ ताई चुप्पी बणी रयी। म्हानै ओ टा पड़न लाग्यो हो'क, बोलण सू तिस घणी लागै। तीनू भूखा अर तिस्या हा। पण पैली बोल'र छोटै बाप रो कुण बणै।

म्हूं सोच मे पड़ग्यो। सीरोळो री मा नै डाकण खावे। जे जगदम्बा-प्रसाद रै आपरी औलाद होंवती तो क्यू गाडी बिरल होंवती। सरीको किनै बखसै? वगत आयां, तन रा गाभा ई बैरी बण ज्याया करै।

सतारानगर आयग्यो । कचेड़ी जांवता ई ठा पड़ग्यो' क, आज मनी-स्टर सा'ब री बेटी रो ब्याव है, नाजम सा'ब बठै गयोड़ा है । म्हारै तो माथै हांडी सी फूटगी ।

कन्हैयालाल बोल्यो, "म्हूं कयो हो' क, तीन……।"

म्हूं बीच मे ई बोल पड़्यो, "फिकर नी करो, एक बामण घटण आळो है। थे नाजम सा'ब सूं म्हारै दाग री मंजूरी भी सागै ले लेया।" काळजै सू उठ्योड़ी आ बात सुण'र दोनू हंस पड़्या ।

"आ हसणै री बात नी है। पेट आगै तो आछा-आछा नै निवणो पड़ै। म्हांसू अबै निर्जला नी करी जै।"

चेतराम रो मूंडो उतरग्यो, "क्यू पिंडत जी म्हाराज, आपां पाणी नीं पी सकां?"

भूख तो सगळां नै ई लागै। पंडित कन्हैयालाल जी तो सगळांऊं पैली मरण नै त्यार हो र्‌या हा। चेतराम रो सवाल सुणतांई मरतै में जान आयगी, "पाणी पींवता कुण पाळै ? लोगां नै पाणी ई पीवणो पड़ै, जीमणो भी पड़ै, सो क्यू करणो पड़ै।"

चेतराम बोल्यो, "थे थारी जिन्दगी में आज पैली वार साचा बोल्या हो, नी तो सदां गरुड़ पुराण ई बाच्यां।"

"गरुड-पुराण तो आगै भी बाचाला, पण जे आज जीवता रहग्या तो। की खाण-पीण रो जुगाड़ करो, नी तो लोग आपां रै लारै गरुड़-पुराण वांचैला।"

जीप नै एक होटल आगै खड़ी करतो चेतराम बोल्यो, "पिंडत-पर-मीशन मिल्ये पछे के जेज लागण द्या।"

होटल रै मांय वड़तां'ई तीन-तीन पाव आळा तीन गिलास पाणी पीयां पछै सांस आयो। कन्हैयालाल झटापट ओडर मार दियो, "पाव-पाव पूड़ी तीन जग्या, तीन गिलास लस्सी फुल अर तीन सौ ग्राम जलेबी गरमागरम।"

सो-क्यू खा-पी'र डकार मारी जद की सांस में सांस आयो। आंख्यां आगै सूं तिरवाळा हटग्या अर होटल में वड़े पछै पैली बार ठा लाग्यो' क

छात आळो बिजली रो पखो चालै है। आदमी पेट रो कुत्तो हुया करै।

"ल्यो सरको अबै आगै चालां पंडित जी।" चेतराम उठ'र बटुअे मूं बिल चुकायो अर म्हे जीप में आय बैठ्या।

जीप सदलपुरै रै सारै मिलदेसर खानी मोड़ली जठै, अठै रा अैमेले अर मीनिस्टर रो घर हो। रस्तो नी थाकै, चालण आळो थाकै। घर मजलां-घर कूचां, छेकड़ म्हे मीनिस्टर सा'ब रै घरै पूगग्या।

घर काई हो, कोठी ही कोठी। च्यारू मेर जीपां अर कारां री लैण लाग री ही। बटाऊ ई बटाऊ अणूता बटाऊ'क, जाणै मेळो मंडर्‌यो हुवै। एक पासै, घासलेट लेवणिया री सी लैण लाग री ही। बूझै उण नै ई सूझै। म्हू नाजम सा'ब सारू पूछण नै बठै गयो तो ठा पड़्यो'क आ तो बान-बट्टो जमा करावण आळां री लगस लाग री है। किणै ई हाथ में गधै रै कान सू छोटो नोट नी हो। भेंट में आयोड़ी चीजां रा ढेर एक पासै न्यारो ई लागर्‌यो हो। फ्रिज, कूलर, स्कूटर, टी० वी० विडियो, रेडियो, टू-इन-वन, मोटर साइकिल, एक-एक चीज रा केई-केई नमूना। घड़िया, मशीना, साइकिला, पखा जिसी मामूली चीजां री तो गिणती ई कोनी। जांणै'क, थोक री दुकान खुलगी हुवै। भेंट देवणियां अर मूतो-बान जमा करावणिया रा विगतवार नाम-ठिकाणा रजिस्टरा मे मांडीजण लागर्‌या हा। म्हारै काळजै मे भूरूळियो सो उठ्यो'क, जे करतार, ईण धरती री सगळी बायल्यां मीनिस्टरा रै घरै ई देय दे तो वीरो कांई बिगड़ ज्यै?

म्हू एक जणै नै नाजम सा'ब सारु पूछियो तो ठा पड़ी'क, "वै तो अठै आठ बजे सू पैली कोनी आवै, इण बखत सदलपुरै मे लाधैला। अठै आवण सारू कलैक्टर साहब, बठै रै नायब जी रो मुआइनों दिखायो है। अबार सगळा हाकम बठै ई'ज है।"

म्हारो मायो ठणक ग्यो। काळजै मे आ बात सांगोपांग ढूकगी'क, तीन बामण घर सू माथै निकळोड़ा माड़ा हुवै। चेतराम रा गोडा सा टूटग्या। कन्हैया लाल री लाग ढीली व्हैगी।

होच-पोच हुयोडा म्हे तीनेक बजे सी'क सदलपुरै पूचग्या। तपत पटण रो नाव ई नी लेवै ही। नायब जी रै दफ्तर मे सगळा रा सगळा

अैलकार अर्दली त्यार खड्या। मेह, मौत अर अफसर कैय'र नी आया करै। म्हारै लार-गी-लार, कलैक्टर साहब री कार, नाजम सा'ब री जीप, अर ऐस० पी०, डी० एस० पी० री गाड़ियां लगू-लग पूगगी।

दिन ढळन नै त्यार खड्यो हो, म्हे टैम हाथ सू खोवणो नीं चावै हा। झटपट नाजम सा'ब रै आगै पेश हुया अर अरदास करी। सगळी राम कहाणी सुण'र पूछियो, "वारिस कठै है?"

"ल्हास रै खनै बैठ्यो है।" चेतराम बोल्यो।

"वारिस री दरखास ल्याओ।" खाज माथै आंगळी सीधी जावै।

म्हारै नीचै सू धरती सरकगी। लाग्यो' क, जाणै कूवै में जा पड्यां होवां।

"अबै इत्ती दूर सू दरखास लिखा'र कियां ल्यांवा सा'ब?" कन्हैया लाल लीलकी गांवतो सो बोल्यो।

"इण बात रो म्हूं कांई केय सकू?"

म्हूं की सोच'र बोल्यो, "सा'ब, बीं बखत जदकै इत्तो रामरोळो माच र्‌यो हो, म्हानै दरखास लिखावण री कियां ऊकळ सकै ही? पण; एक बात है सा'ब, औ चेतराम जी भी जगदम्बा प्रसाद जी रा 'दादा-भाई' रा पोता है। आ खनियां दरखास लिखाया काम नी चाल सकै?'

नाजम सा'ब स्याणा, समझदार अर जात रा बाणियां लाग्या। म्हारै मूंडै खानी देख'र मुळक्या। म्हानै म्हारै सवाल रो पड़ूत्तर मिलग्यो। बठै सू ई एक कागद लियो, दरखास लिखी, चेतराम रा दसखत कराया अर सा'ब आगै पेश करी।

नाजम सा'ब राजासर रै थाणेदार रै नांव हुकम लिखण लाग्या तो म्हूं बतायो'क, "राजासर में तो दोनूं ई थाणेदार छुट्टी पर है, सा। बठै तो खाली हवालदार जी ड्यूटी पर है।"

"हवलदार नै तो तफतीस रा पावर नीं हुवै। बी नै हुकम कियां दियो जा सकै?"

"ओ तो आप जाणो सा, ही जिकी बात म्हूं आपनै बताय दी।"

की सोच'र बां नारायणगढ़ रै थाणेदार जी नै हुकम लिख दियो।

म्हे हुकमनामो लेय'र पैली तो पैट्रोलपम्प खानी गया, जीप में तेल घलायो। फेर टेलीफून-एक्सचेन्ज खानी गया, सरपच सूं वतळावण करी अर सगळी थात बताय'र नारायणगढ़ खानी व्हीर होग्या।

ऑडर बाचता पाण, ठाकर-सा री आंख्या लाल होगी, "म्हूं थानैं राह बतायी अर थे म्हारैं ई माथैं चेप ल्याया। राजासर रैं मरकल सूं म्हानैं कांई लेणो-देणो ? म्हू नी जा सकूं इण वखत। काल म्हारै थाणैं रो मुआइनों है। म्हूं बीनैं सम्हाळूं'क बीजा थाणा रैं अड़ंगा में उळझतो फिरूं?" डर हो जठै ई दिन आ थम्यो।

म्हा तीना री हाळत खस्ता खराब ही। सैन-सकती खतम हो चुकी ही। थकेलैं सूं डील टूटैं हा। दिन छिपण में हाल घड़ी-डेढ घड़ी बाकी हो। आ आस वंधेड़ी ही'क, जे पुलिस पूगज्यै तो हणैं दिन छिपै सूं पैली दाग लाग सकै। धीरज रो अडेखण हटग्यो अर म्हूं बोल पड़ियो, 'ठाकर-सा, *ओ ऑडर म्हे तो लिख्यो कोनीं, नाजम सा'व लिख्यो है।* थानैं जे इनैं मानणो है तो मानों नी तो ई रैं माथैं लिख द्यो'क, म्हूं नी जा सकूं। म्हे बांनैं पूठो पकड़ाय देस्या। बठै ई कलैक्टर साहब बैठा है अर बठै ई एस० पी० सा'ब। किनैं-न-किनैं तो आय'र माटी नैं दाग दिरावणो ई पड़ैला। आज नी तो काल, काल नी तो परसों, तरसों, नरसों, छेकड़ बूढियै री माटी नैं तो दाग होयां ई सरसी। जमीन जायदाद रा झगड़ा कोर्ट-कचेड्यां में सळटीजता रैंसी। थानैं चालणो हुवै तो चालो, नीं चालणो हुवै तो ई'रै माथैं लिख द्यो।"

म्हारी दो टूकड़ा बात सुण'र बांनैं एकर तो तरांटो आयो, पण ओजू की सोच'र वैं नरमाई साध'र बोल्या, "आप की भण्या गुण्या लागो हो। थे ई'ज बताओ'क, दूजै रैं हल्कै में म्हानैं क्यूं जावणो पड़ै ? जे ओ अड़ंगो म्हारैं हल्के में होंवतो तो म्हूं इती जेज'ई को लागण देवतो।" निजरां में टरणाटै री रोकड़ी भूख झलकै ही।

"म्हूं आपरी बात समझूं हूं। पण मिनख पणो भी तो कीं होंवतों हुसी ? म्हारैं बूढियो कांई लागै ? थोड़ी-सी'क, उठ-बैठ ई' ज तो हीं। भगवान किणी रो बूरो नीं करै, दिनूगै रा भूखा-तिसा भाज्या फिरां।

क्यू ?''''''क्यूं'क माटी नै दाग देवण में सागो करणो पुनः रो काम मानी जै। आप नै तो ओ पुनः घरे बैठां ही मिलै।''

"म्हानै तो ईस्या पुनः दिनूगै सू सिज्या ताँई मिले, पण खाली हाथ मूडै कानी नी जावै अर थे भी एक बात हिवडै राखज्यो' क' आजकलै होम करतां हाथ बळै। खैर अबै थे ईयां करो'क, राजासर जाओ परा। म्हू अठै सू होशियार सिंह नै फोन कर देस्यू। वो आपरै सागै जाय'र म्हारै कानी सू सगळी कारगुजारी कर देसी।"

म्हारै दिमाग मे ओरूं एक सक आयग्यो' क हो-न-हो अै आपां नै टरकावै है। म्हू अरज करी' क, 'आप हवालदार जी रै नाव एक पानड़ी लिख द्यो। जिकै सू जे फोन पूगण में की देर भी लाग ज्यै तो, पानड़ी सू म्हारो कारज सरज्यै।"

म्हारी बात थाणेदार जी मान ली। म्हे पानड़ी लेय'र राजासर कानी चाल पड्या।

चेतराम अर कन्हैयालाल म्हारी बहस सुण'र हक्का बक्का होयग्या। चेतराम म्हनै कैवण लाग्यो, "जे आज थे नी होंवता तो ओ ठाकरड़ो म्हानै तो की दिवाळ नी हो। साची है'क, पढियोड़ा रै च्यार आंखिया हुवै।"

कन्हैयालाल बोल्यो, "म्हनै तो दिनूगै आळो सीन देख'र ई ठा पड्ग्यो हो' क, ओ तो राखस ई है। ह्या-दया तो ई रै काळजै में है ई'ज कोनी।"

म्हूं कैयो'क, "ह्या-दया तो पुलिस आळां मे होवै'ईज कोनी। नी तो इणा री पार ई नी पडै। दिनूगै सू लेय'र सिज्या तांई सैंस चोर-उचक्का आ लोगां सूं टाकरै। हाकमी तो गरमाई सू ई चालै।"

राजासर रो थाणो सड़क रै ऊपर ई'ज है। जीप पूची जद ताई च्यार सिपाहियां रै सागै हवलदारजी वर्दी करो त्यार खड्या हा। जीप रै ठमतां पाण, हवलदार जी आगै अर सिपाही लारै, झट करता चढग्या। जीप गांव कानी चाल पड़ी। चेतराम बोल्यो, "पिंडंत जी, हणै ई आपां पंडित तो थै ई सागी तीन ई हां।"

"पण बिन ढळे पछै अमर घटग्यो।" ओ पंडित कन्हैयालाल जी रो पडूतर हो।

आंगणै सूं बाखळ तांई लुगाया अर बाखळ सू गुवाड़ तांई मिनखा रो कोई निवेड ई नीं हो। दुनियां री जीभ कुण पकड़ै ? जित्ता मूंडा बित्ती बाता, सदा हनुमान प्रसाद रै बेटा ई धायो, रामप्रसाद री औलाद रै काई काको नी लागै ?"

"सेवा कण करी ? आधी-उमर रोटा पो-पो घालणो कोई सोरो काम है ? दो बरसा सू तो खाट पर पड्यां रा हीडा करया। अबै जायदाद लेवण नै बाको बाय लियो। छछियारी नै छछियारी कद सुवावै।"

"जीवता थका आगलै री जी-सोरो ही वठै ई रयो। सेवा करणियां जे सेवा करी तो खेत खळां रो माल भी खायो। छव-छव छोरियां ईयांई को परणीजै नी। अबै मरे पछै तो जित्यो आ रो काको हो बीस्यो' ई बारो।"

"पण बां रा लखण भतीजां सा कठै ? बेटा बण'र तो खायो जा सकै बाप बण'र नी खा सकै।" दुनियां जैड़ी देखै, बैड़ी कह दै।

पुलिस आपरी कार-गुजारी सरू कर दी। हरिशंकर री जोडायत अर बू-बेटा नै बुलाया, पण वै आपरै डागळै चढ' र ई बयान दिया। धन मिलतो देख'र गौरीशंकर भी आयग्यो, "मनै भी पाती मिलणी चाइजै। म्हू भी पंडित राम प्रसाद रो ल्होडियो बेटो हूं। म्हारै अै काको सा लागता हा।"

"तू तो गोरिया आधो-आध रो हकदार है। जा, पाती लेवण वास्तै तेरो बाटक्यो लिया।" कन्हैयालाल कयो तो ई गमी रै बखत भी सगळं नै हंसी छूटगी।

हरिशंकर री जोड़ायत जमना आपरो बयान दियो'क, "म्हानै म्हारो हक मिलणो चाइजै। इत्ता बरसां आ एकला सगळी जमीन बरती-खाई। चलो, म्हे लारलै हिसाब-किताब नै छोडां। अबै आगै सू घर खेत मे आधो-आध मिलणो चाइजै।

"म्हनै, थारै जमीन-जायदाद रै टटै सू काई मुतलब नीं। ओ झमेलो

कोर्ट-कचेड्यां में सलट्या । म्हनै तो आ बात बता'क, ई माटी नै दाग क्यूं नी देवण दियो ?

"कचेड़ी चढ़णो कांई सोरी थोड़ी हुवै । टक्का लागै, टक्का ।" चेतराम री जोड़ायत अंगूठा सू रिपिया टरणावतीं सी बोली ।

"लगास्यां, टक्का भी लगास्यां । बिना टक्का आज कांई वणै है ?" काचळी कस'र जमना डागळै रै वरलै कंगूरै तांई आयगी ।

हवालदार दोनां नै बीच मांय ई रोक'र बोल्यो, "इण बात सूं म्हानै कांई लेणो-देणो नीं है । थे इण दाग नै क्यूं रोक्यो ?"

"म्हे कद रोक्यो ?" जमना साफ नटगी । आंख्यां देख्योड़ी कद बिसरीजै ? जिका लोगां दिनूंगै आंख्यां देखी ही श्रां, बी नै घणो'ई ढीठियो । पण बठै कांई अमर होवणो हो । झूठ रा किसा सींग पूंछ हुवै ।

"अबै कांई करणो है ? ई ल्हास नै घरे ई साड़नी है' क, दाग देवणो है ।" होशियार सिंह जी बोर्ल पूछियो ।

"म्हे क्यूं रोकां ? म्हे तो बाद मे देखस्यां आं दाग देवणिया नै ।"

"बाद मे कांई देख स्यो ?"

"आ बूढ़िये नै ज्हैर देय'र मारियो है । लुगायां री अक्कल घाघरै रै घेर जित्ती ।

तलवार बाजी चोखी पण दांतबाजी खोटी । हवालदार जी नै तर्राटो आयग्यो, म्हूं बता सूं'क, ज्हैर कियां दिया करै ।" सिपाहियां नै कयो, "ईनै ल्याओ पकड़'र ई कानूनबाज नै । कद लागी ही डागळै चढ़ी-चढी कानून बघारण नै ।"

सरपच रोक'र बोल्यो, "जावण दूयो हवालदार जी, लुगाई री जात रै मूंडै नी लागणो चाइजै ।"

"थे अर्थी उठावो । चालो देवां दाग । म्हू आपै'ई देख लेस्यूं ईं नै ।"

म्हूं बोल्यो, "बात आ है हवालदार जी'क, जे आपां ई माटी नै दाग देस्या तो फेर आपाणै खनै ईं बात रो कांई सबूत रैसी'क, ई नै ज्हैर नी दियो हो । इण वास्तै आपां पैली ईं रो डाक्टरी मुआइनों करां लेवां तो ठीक रैसी ।"

चलेवो

"सगळो गांव गवाह है' क, दादो दो बरसां सूं बिमार हो। डाक्टरां रो इलाज चालै हो। आं रै कैयां कांई हुवै ?" चेतराम नै गरमी आयगी।

"आ बात ई खरी पण आं री बात नै मानणियां री ई कमी नी है। दाग दियां पछै आपणै खनै आपणी वे कसूरी रो कांई सबूत रवैला ? वारै वर्षां रो नथियो अर गोमती बाई, हाथी रै पग सूं बंध ज्यावैला।"म्हारी बात हवालदार जी नै जचगी।

दिन छिपण में अवै दस-बीस मिनट सूबत्ती नी हा। कद सरकारी डाक्टर आवै अर कद ओ टंटो मूकै। ऊंट इण कड़ बैठैला, आ किण नै ठा ही। छेकड आ बात आगलै दिन माथै छोड'र हवालदार जी चलेग्या अर सिपाही लारै छोडग्या'क, रात नै कोई झगड़ो-टटो नी व्है जावै।

म्हूं म्हारै घरे चलेग्यो। सारै दिन रै थकयेड़ै नै म्हनै तो पड़तां' ई नींद आयगी। आखी रात पसवाड़ो फोरन रो ही काम नी हो।

दिनूगै उठ'र नथियै रै घरै पूग्यो जद ताई सूरज खासा ऊंचो चढ़ग्यो हो। बास-गळी रा बीसू आदमी अर लुगायां रात कटावण में बैठा हा, इण वास्तै कोई नूओ झमेलो नी'हुयो। दसेक बजे सी'क डाक्टर सा'ब अर हवालदार जी आया।

कागजी खाना पूरी कर'र पोस्टमार्टम करीज्यो। परसूं दोफारै सी'क दूध रै सागै दो एक बिस्कुट घोळ'र दिया हा। वै हा ज्यू-का-ज्यू पेट में पड़िया हा। डाक्टर सा'ब कुचर'र काढ लिया अर लाम्बो सिसकारो मार'र बोल्या, "औलाद कमीण निकळ ज्यै मरे पछै भी खायोड़ो कढा देवै।"

म्हूं मन में सोचू'क, जे ई रै जायदाद ई नी हुंवती तो ओ झमेलो ई नी हुवतो। चीकली चोटी रा सै लगवाण हुवै।

जमना आपरै डागळै चढ'र रोळा रप्पा मचावणा सरू कर दिया, "देखो ई गांव रोराम नीसरग्यो है। ईं चेतियै अर कन्हैयै रै कंवणै आय'र म्हारै बडेरां री माटी बिरून कराई है। ई साठ साल रै सिरेपंच री सुरळी भंग हुयी है'क, आ छोर छंडा रै लगाये-लगाये म्हारै घर में पुलिस बाड़ दी ओऽऽ......काको सा ओऽऽ......ओ काको जी ओऽऽ......।" अर

गाव सूं ऊंचो-ऊंचो रोवणो सरू कर दियो। रोवणो सैंसू मोटो राग। रोवै अर रोवण रै नागै सागै हेला पाड़ै। हेला मे सगळा नै कोसै। पण रोया राबड़ी कुण घालै ?

घड़ै जैड़ी ठीकरी अर मां जैड़ी डीकरी। कुआरी बेटी अर दोनू बहुआं भी डागळै आय'र रोवणै में रळगी। तिरिया-चलित्तर रो नूओ नाटक देख'र लोगां दाता नीचै आंगळी दाब ली।

कन्हैयालाल, सगळा किरिया-करम कराया अर पंडित जगदम्बाप्रसाद रो चलेवो चाल पड्यो। रामप्रसाद आळा पांचू पोता सागै रळन री कोसिस करी पण सरपंच गंडकार दिया अर वै पूठा घर मे बड़ग्या।

सैकड़ां लोगा री भीड़ चलेवै रै सागै ही। ई' सू पैली गाव मे किणै'ई चलेवै मे इत्ता लोग नी देख्या हा।

कन्हैया लाल संख बजावै, नथियो डडोत करै अर चेतराम, मागियो, बिरजियो, पतराम, काधिया बण'र दादै नै बठै ले चाल्या, जठै एक दिन सगळां नै जाणो है।

□

लाडियो

गोरियैं-काळियैं रै हेली स्यू निकळतांई बास गळी मे हाको सो पाट ज्यै अर टाबरां री तड़बड़-तड़बड़ माच ज्यावै। कोई तो खूणै मे लुकै, कोई भीत लारै अर कोई आपरी मा-दादी री झोळी में। ईसा राखस छोरा कठेई नी देख्या। टाबरां रा बूकिया पकड़'र भंभीरी ज्यू भुंवा देवै। कई तो मटा ईसा पाका'कै जद बांनै भंमूळियै ज्यू भुवा'र दोनू हाथां स्यूं आभै तांई ऊंचाय देवै तो डागळै चढ्योड़ा-सा मीणै ज्यू टुकर-टुकर देखै। बांरी मावां छुडावण नै लपकै, "ओ गोरू जी, सांस ऊंचो चढ जिसी।"

"हुम्बै भाभी, तू'ईं नादीद जाम्यो है'कै सास ऊंचो चढ जिसी।"

छव म्हीना री लोढ़-बड़ाई रै मामै-भाणजै आळी गोरियै-काळियै री आ जोड़ी क ख री नतथी ज्यू बास गळी रा टाबरा नै कुकाणती अर संतरै कस-आळी मीठी गोळ्या बाटती फिरै।

जद कदे'ई सामली सेठाणी, ओळमो लेय'र आवै तो बकीलणी मीठो चूंटियो सो भरै, "चोखो भाई, म्हूं कांई करूं, थे जामणा बन्द कर द्यां'र व्हा।"

"ओ ऽऽ काकी जी, जुआ रै डर स्यू घाघरियो फैंकीजै काई ?"

"व्हा नी फैंकीजै तो, जद ईंरी लुगाई आ ज्यावै अर जामणा सरु करै तो थे'ई बानै कुकाण्या।"

भाणियो भी माम्या रो लाडलो अर देवरियो भी भाम्यां रो लाडलो। अै मीठी मीठी मसखर्‌यां नित ही होंवती।

दीतवार रो दिन, पढण-लिखण री सगली छुट्टी। मामो-भाणजो,

भाभ्यां-माम्यां स्यूं वार्थेड़ो करता टेसण तांई चलेग्या'के, एक ठौड़ भीड़-भाड़ देख'र वठीनै लपग्या । वां दिनां अठै मदारी रा ख्याल जबरा होंवता आही सोच'र पूंच्या तो के देखै'कै एक तीन-च्यार बरसां रो छोरो खड्यो रोवै । ना तो कुड़नो अर ना ही जांघियो । सफा नागो-तड़ीग । लोग भेळा होयोड़ा कदेई बीरो अर कदेई बीरै बापरो नांव पूछै । बो रोवणो टाळ'र की नी बोलै ।

गोरियै, गूजै स्यू बाढ'र संतरै कस आळी दो फांक्या बीनै पकड़ाई तो एकर रोवणो थमग्यो । कई ताळ जाड़-रै नीचै कड़ाका बाज्या । काळियो सारलै घर स्यूं पाणी रो लोटो भर ल्यायो. बण पी लियो ।

"तेरो नाव कांई है ?" गोरियै पूछ्यो ।

बण नस नै आसै-पासै हिलाय दी ।

"तेरे बापू रो काई नाव है ?"

बो ओरू नस रै लटकै स्यूं नटग्यो ।

"गांव किसो है ?"

फेर बो ही नस रो लटको ।

'तेरी मा रो कांई नाव है ?" काळियै पूछ्यो ।

"माऊ'''।"

"ओ'ही गांव है ?"

अर बो ही सागी नस रो लटको ।

घुमा-फिरा र कित्ती'न कित्ती बार पूछ्यो पण बो रोवणो टाळ'कर की नी बोलै । इंजण री सीटी सुण'र लोग टेसण कानी टपग्या अर लारै रहग्या च्यार जणा, गोरियो, काळियो, राजियो सेठ अर बो छोरो । वै तीनूं'ई चालण लाग्या तो छोरो बारै लारै ही चाल पड्यो । गोरियै दो फांकयां ओरू दी'कै, "जा लाडी थारै घरे जा ।" पण, छोरै तो जोर-जोर स्यूं रोवणो सरू कर दियो ।

राजियै पूछ्यो, 'रोटी खासी काई ?" वण हामी मे सिर **झटक्यो** । बीनै ल्यार वकील जी री हेली आमलै पीपळ रै गट्टै खनै **बिठाय दियो** । काळियो घर मे गयो, साग-फलका लियायो । छोरो झट लागग्यो ।

नाळो तो कणी मोड्यो नीं हो, पण छोरो नी तो तीन बरसां'ऊं छोटो अर नी च्यार बरसां'ऊं मोटो लागै हो। उघाड़ो रेवण स्यूं काळो होग्यो नी तो गंहुवरणो रंग हो। हो तो मरकळो सो पण नाक नक्सो सावळ हो।

राजियो बोल्यो'कै, "म्हारै घरे तो दादी गेळा करै, नी तो म्हूं ले ज्यावतो।"

"म्हारै घरे नानी रोळा करै।" काळियो बोल्यो।

"मा नै तो राजी कर लेस्या काळिया, पण काको जी आळी गाळ्या कुण खावै?"

"जे निरी गाळ्यां'ऊ सर ज्यावै तो म्हूं खाय लेस्यू फड़ीड़ बाज्या तो तेरा!"

"वै किसा पूछेला थोड़ै'ई'कै, कुण के खासी? पण काळिया, तू तो स्वासणो है, बच जिसी अर फडीड बाजैला मेरै।"

मामै-भाणजै नै बतळावतां छोड'र सेठ तो सिरक ग्यो। छोरै रोटी खाय ली तो काळियै बीनै पाणी भी पिलाय दियो अर बयो'कै, "जा लाडी अबै थारै घरे जा।"

कैंवता-पाण छोरो बोकाड़ै चढग्यो। अबै कोई करै तो के करै? कै, काळियै नै हाथा मे मिठाई रा ठूगा लिये नानोजी आंवता दीख्या। दोनूं भाज'र मायली साळ में लुकग्या। छोरो ईसो छाकटो'कै लार-गी-लार हवेली में बड़ग्यो।

बाखळ मे रोवतै नागै-तडीग छोरै नै देख, वकील जी पग पीट'र बोल्या "भाग-भाग, भाग ज्या।"

पण छोरै रो बाको और घणो पाटग्यो अर बोकाड़ा स्यू हेली गूजगी।

"अरे, ओ छोरो कींरो है?" बकील जी रो ऊंचो हेलो सुण'र वकीलणी चबूतरे तांई आई अर पूछ्यो, "ओ छोरो कोरो है?"

"आ-ही तो म्हूं पूछू!"

"मनै तो ठा कोनी।" छोरै खानी देख'र बकीलणी पूछ्यो, "कीरो है रे तू?"

छोरो रोवण स्यूं बत्ती की नी बोलै। घौसरा पेट ताई पसरग्या अर हिचकी बंधगी। वकील जी री छोटकी बेटी, बडोड़ी बहू अर सामली सेठाणी भी हाको सुण'र वठै आयगी।

बेटी बोली, काळियो, कदेई साग-फलका अर कदेई पाणी, लियां तो फिरै हो, काको जी।"

सामली सेठाणी धीरै-सी'क वकीलणी रै कान मे कयो कै, "दोनू मामो भाणजो, पीपळ रै गट्टै खनै, ईनैई जिमावै हा।" सेठाणी री वात उथळ'र बतावण री जरूरत नी पड़ी। सोदी सुणीजगी।

"गोरियो-काळियो कठै है?" वकील जी गरज्या।

बडोड़ी बहू सासु रै कान में कयो'कै, "मांयली साळ कानी गया है।"

"तो फेर, ओ बांरो ही काम है, नी तो साळ में कोनी लुकता।" वकीलणी आपरी दलील दी।

सगळी वाता साळ ताई सुणीजै ही। चांद आगै लूकड़ी कठै लुकै? दोनू आंगणे मे आ टकर्‌या।

"ई छोरै नै कुण ल्यायो है? वकील जी थाणेदारी सवाल कर्‌यो।

"म्हे टेसण खानी स्यू आवै हा। ओ बठै खड़्यो रोवै हो। गोरियै इनै गोळियां दे दी। ओ म्हारै लारै-लारै अठै ताई आग्यो।"

"कोरो छोरो है?"

"म्हानै ठा कोनी।"

वकील जी सोच मे पड़ग्या। कुण है? कोरो है? कांई जातियो है। इण तरै रा सैंस सवाल बांरै दिमाग में भतूळियो सो उठाय दियो।

वकीलणी दोनां नै फटकारती सी बोली, "नागड़े खादो वर्यां-भी ल्याया हो ई कुण-केडै नै? ओ के कूरियो थोड़ी है'कै, थे पाळ लेस्यो।

छेकड़ काळियै-गोरियै रै सागै, बी छोरै नै लेय'र वकील जी थाणे गया। पुलिसिया तो कदेई कीनेई कीं दिवाळ कोनी हुवै। सगळी बात सुण'र थाणेदार जी बोल्या, "वकील जी, म्हे इनै कठै राखस्यां? थारे को वात री कमी कोनी। जठै गंडका विलड़ा ही पळै, ओ तो माणस, जीव है, वच्योड़ी जूठ-कूठ खाय'र पळ जिसी। जे कोई इनै ढूढणियो **आयो तो** म्हे

थारै खनै लियास्यां।" छोरो बकील जी रै गळै ही बंधग्यो।

लादियै री पालण-पोषण रा कोडायला, गोरियो-काळियो अबै आपरो जेब खर्च तमात वीरै माथैही'ज खर्चे।

घर मे था मामै-माणजै'ऊ छोटो टाबर नी हो। सामली सेठाणी आळै विजयै रो कच्छो-कुड़तियो ल्या'र एकर लादियै नै ढकियो।

कीड़िया वास्तै तो मनोरथ ही रामजी हुवै मेळै खातर भेळी कर्योडी जमा खर्ची काढी अर कई दिनां रो जेब खर्च अगाऊ लेय'र लादियै खातर एक छोटी सी सन्दूकड़ी ल्याया कचकड़ै रा रमतिया, पीपटी, रबड़ री दड़ी अर माटी रा ऊँट घोड़ा ल्याइज्या।

बकील जी रै नाव मंडा'र बजाजां स्यूं कपड़ो फड़ायो अर दर्जी स्यूं सिड़ायो। फीतै आला बूंट अर जुराब पराइजीया। छदाम रो छाजलो अर टको गंठाई रो। लादियो ठम-ठम करतो फिरै।

पण खनै कुण सुणावै? कै ठा के जातियो है? कपड़ा पळट्यां काया नी पळटीजै। लारली साळ में एक पासै खटोली ढाल'र गूदड़ो बिछाय दियो। दूसरै पासै टोगडियो बन्धै। मामो-भाणजो पग पटक'र रहग्या, पण लादियै नै बाखल स्यू आगै थळी नी लांघण दी। एक, गिलास-बाटकी अर थाळकियो, समूलाई लादियै नै सूप दिया। ऊपर स्यूं घाल दै अर लादियो जीम लै।

रात नै लादियै नै टोगड़ियै री बतळावण अर टोगड़ियै नै लादियै री। सोवण'ऊ पैली, मोड़ै तांई मामो-भाणजो सम्हाळै अर पछै जद कदेई जिको भी उठै, दूर'ऊ देख ज्यावै'कै, लादियै री नीद रा खर्राटा बाजै।

दितूगै देखै तो गूदडो तर। अबै मूत्योड़ा गूदड़ा कुण सुकावै? लादियै स्यूं चकीजै नी अर दूजो कोई चकै नी। फूलकी जद सफाई करण आयी तो गूदड़ी बण सुकाई अर फूलियो जद कूतर करण आयो तो गूदड़ो बण बिछायो। एकर सोच्यो'कै, ओ छोरो फूलियै-फूलकी नै ही दे देवा। पण जे ओ ऊँची जात रो होयो तो? हीण जात मे पळ'र ओ भी हीण काम करण लाग जिसी। आपां नै पाप लागैला। गोरियै कळियै रो चाहितो होण स्यूं, वै देवण भी कोनी देवै

लादियै रा दिन इयांई रमतियां अर बिलड़ी स्यूं खेलतां बीत ज्यै। खाण-पीण अर पैरण ओढण रो की टोटो नी। राजा रै दरबार में मोत्यां रो कांई काळ ? पण बिलड़ी जद घर में भाग ज्यावै तो बो थळी मायं'ई खड़्यो देखतो रह ज्यावै। बिलड़ी री कोई जात नी हुवै, मिनख जात-पांत में बंट्योड़ा होवै।

सामली सेठाणी, मिंदर आळी ताई; रुकमा भुआ, गोदावरी बडिया, कूट आळी काकी, मांगियै री बाई, राजियै री दादी आद वास-गली री लुगायां देखें'कै, टाबरा नैं कुकावणिया मामो-भाणजो कियां लादियै नैं लडावै अर बड़पन मे बडाग्यला फूडोज्या फिरै।

दिन जातां कांई देर लागै ? लादियो मोटो होंवतो गयो अर समझ पकड़तो गयो। गुड़तो-गुड़तो भाटो'ई गोळ व्है ज्यावै। बण घर में सगळां स्यूं रिस्ता बणाय लिया। कदेई कुलफी खातर भाभी स्यूं रूस ज्यै कदेई की रमतियै खातर मा स्यूं अर कदेई सूगा गाभा-लत्ता खातर काकोजी आगै जिद करणी। तोड़ा-भांगी अर ऊजाड़ करण मे भी लारै नीं रवै।

ऊगतै धान री पनोळ'ई छानी नी रवै। ठा नी वद बो माटी चाटण लाग्यो अर साल-छव म्हीना मे ईज लादियो, ढेलियो वणग्यो। धेज लटकग्यो। मूडो पीळो होग्यो। हाथ-पग पतळा पड़ग्या। सारै दिन घड़ी घड़ी हूंगै। ईसो सूगलो होग्यो'कै, गोरियै-काळियै रै जी स्यूं भी उतरग्यो मामो-भाणजो, होंठां रै लाग्योड़ी धोळख देखतां'ई फड़ीड़ मेल देवै। लादियो बां स्यूं डरै अर लुकछिप'र माटी चाटै। असपताल लेज्या'र डाग धर सा'ब स्यूं दवाई दिराई, पण दवाई बापड़ी कांई करै ? माटी खावणी बन्द करै तो कारी लागै।

एकर लादियो लारली साळ में बड़्यो माटी चाटै हो'कै रगे-होठां पकडीजग्यो। अबै थे कांई बात पूछो। गोरियै-काळियै रा दोनूं खानी स्यूं फड़ीड़ पड़न लाग्या। लादियो अरड़ायो। जद लडावणियां ही मारै तो छुड़ावै कुण ? मार रै आगै तो पाडा'ई परांवै। तीन तिलाक कढा'र छोडियो।

ऊंट स्यूं पड़ै अर भाड़ेती स्यूं रूठै। रात नैं बो जिमे बिना ही सोग्यो।

वकीलणी रो काळजो कुळबुळावै। घणाई न्होरा काड्या पण टस्स स्यूं मस्स नी होयो।

दिनूगैं बारली पोळ खुली पड़ी ही। लारली साळ में जाय र देखै तो बठै चिड़ी उड़ै'न काग बोलै। लादियो भाजग्यो।

गोरियै-काळियै ढूंढण में को कसर नीं छोड़ी, पण बो कठैई नी मिल्यो। बकीलणी जीमण वैठी तो कोइयो तोड़तांई लादियो याद आ ज्यावै, "मर ज्याणो कठै गयो है! किसी मा बैठी है'कै पुचकार'र जिमा देसी" अर थाळी पूठी सरकाय दी। काळजो मुंडै नैं आवै दो ढाई बरसां में सगळा रै काळजैं चढग्यो।

रोवती नैं पीहरिया मिल ही ज्यावैं। लादियो दिखणादै बास में सेठां री हवेली पूचग्यो। सेठाणी राख लियो'कै छोटा-मोटा काम उठाय लेसी। रोटी सटै के घाटो है?

लादियो गायां-भैंस्या प्या ल्यावै, तूड़ी नीर दे हर्यो मिलाय दै, बाटो ठार दे, वरतण-भांडा माज दै बुहारी-झाड़ी कर दे अर पोळ आगै बैठ्यो रवै।

सेठाणी रा छोरा-छोरी फळ खावै, मिठाई खावै अर लादियो तरसै। बीनैं रात रा बासी टुकड़ा दीनूंगैं अर दीनूगैं रा रात नैं। भादवै में परणी ज्योड़ा नैं सावण कद चोखो लागै। पोळ आगै बैठ्यो लादियो बकील जी रै घरे कर्‌योड़ा गटका रा भटका लेवै हो'कै, एक राह-बगतैरो, जेब में घालता थका, एक रिपियो पड़ग्यो। बण चक लियो। कुलफी खाई, पाणी पतासा खाया, अर कई ताळ मरड़-मरड फांक्यां चाबी।

अबै सदा'ई बिलडी रै भाग रा छींको थोड़ी टूटै। लादियो सेठा री जेब तकावै। पण गवळै इत्ती पोल कठै'कै कोई दो बार जीमलै। छेकड लादियै सड़क पर टपता मिटखां स्यू मागणो सरू कर दियो। कोई तो पीसो-टको दे ज्यावै अर कोई गंडकार दवै। मिझ्या तांई पावली बण ज्यावैं अर बो बाजार में चाटयावै।

एकर लादियै रो भीख मागणो अर सेठ रो हवेली स्यूं निकळणो होग्यो। ई हेली रो घरू नौकर भीख मागैं? आख्यां देख्योड़ी कद

विसरीजै। बी बखत ही लादियै नैं लातां री देय'र घर स्यूं काढ दियो।

गोरियो-काळियो मदरसैं जावण सारू हेली स्यूं नीसर्‌या'कै पीपल-गट्टै खनै लादियो खड़्यो। छव म्हीना रै आन्तरै स्यूं लादियै नैं देख'र गोरियै पूछ्यो, "इत्ता दिन कठै हो रे ?"

लादियै पग झाल लिया। रोवै अर तिलांका काडैं'कै, 'भळै कोनी जाऊं।"

"मरज्याणा, रोटड़ी गिट ले। के ठा कर स्यूं भूखो मरतो हुवैलो।" वकीलणी रो काळजो पसीजग्यो।

आगलै दिन स्यूं लादियै रो मदरसैं में नाव लिखाईज्यो, लादुराम। धर्म, हिन्दू। बाप रो नांव, भगवान दास जात री जाग्या मांड'सा खाली छोड़ दी। संरक्षक, पंडित दीन दयाल जी वकील। पाटी-पोथी ल्याई जी अर अबै डुगरो ढमकांवतो लादियो, ठकराईठाठ स्यूं मदरसैं जावै।

चीचड़ा नैं कांई ठा दूध रो स्वाद। बो मदरसै में दूजा टाबरां सागै अळबाद करै। सात बरसां रो ठोरड़ू, च्यार-पांच बरसा रै टाबरा नैं ठोक नाखै। बांरी चीजां खोस'र खाय नैं। बरता तो किगाई नीं छोड़ै। मरड़-मरड़ चाब ज्यावै। लोगा रा ओळमा आवण लागग्या अर लादियो, गोरियै-काळियै रै हाथां एवर ओरूं कुटीज्यो कोयलै नैं कितो'ई धोवो सफेद नीं हुवै।

लादियो घरे रैवण लाग ग्या अर डांगर-पशुआं रो काम-धन्धो करै। चीकणी माटी अर वेकळू रेत ल्या देवै। बंटड़ी नैं नुहाय देवै। गोबर थाप देवै। लकड़ी तोड देवै। बाखल ताई तो अै ही काम हो सके।

फोरा दिन कैय'र नी आया करै। बकील जी रै गूजै मे पाच रिपिया गे नोट घटग्यो। जांच पड़ताल होवण लागी अर लादियो फंसग्यो। दूजै ही झापड़ मे हामळ भर ली। करमहीणा री खेती छीण हुया कड़ी अर गाभा-लता, पीपळ-गट्टै खनै पड़ता'ई दीस्या।

तलाकां काढी, पण पार नी पड़ी। सन्दूकड़ी साम'र ज...

डाकोतां स्यूं किसा घर छाना। इबकै पूच्यो ...

डागदरनी रै ऊपर थळी रा नान्हा-नान्हा टाबर।

पाळ्यो पोस्यो छोरो रोटो सट्टै टाबर रमावण नै मिलग्यो, बै तो न्हाल होग्या।

पण कित्ता'क दिन लादियै रा लखण छानी थोड़ी रवै हा। डागदर सा'ब रै घरै भीट-भांट री घणी अबखाई नी ही। लादियै रा हाथ चोकै-चूल्हे ताई पूवण लाग्या'कै, करेई तो चाय नै दूध नी लादै, बिलडी पीगी हुवैला। करेई सरबत री सीसी खाली लादै, ढुलग्यो होवैला। करेई टोकरी में सेब-सतरा कम लादै, टाबर खा ग्या हुवैला। कदे' न कदे, आं बातां रो छेकड़लो पासो तो आवै'ईज घी-खांड स्यूं ल्याड़ोड़ी कटोरी लादियो मांजै'ई हो'कै, डागदरनी देख लियो। अबै तेरा बधै'क मेरा। झाड़ू लेय'र ठोकण लागी'कै, एकूएक सीख मगरां माथै छपगी।

बो पछै लादियो, बो सहर में नी लाद्यो।

☐

तीजो दिखाओ

मई रो म्हीनों । सन् छियत्तर री मई । म्हूं सिझ्या पड़्या घूमण नै नीसरूं। रिटायर होण रै बाद स्यू म्हारै खनै इण स्यू दूजो की हीलो कोनी। थोड़ी ताळ चालतां'ही, नहर आ ज्यावै । नहर रो पुळियो टपतां'ई परलै पासै थोड़ो सो'क अळगो भीखू रो खेत है । भीखू म्हाऊं दो साल वडेरो है । परपाई रै ताल मे म्हे भेळा ही रम्योड़ा हा । मनै रिटायर हुयां तीन बरस बीत ग्या अर मैं रोजीना घूमण जाऊं । भीखू रै खेत स्यू मनै लगाव सो होयो लागै ।

भीखू रो पोतो गोपाळियो पाच बरस रो है । वो चीणा रै ढेर पर बैठ्यो, दोनू मुठ्या मे चिणा लेय'र आपरै सिर पर खिडावै अर खिलखिलार हसै । बीरी भैण सरबती बीनै पकड़न नै आवै तो बो भाग ज्यावै । जद सरबती पूठी चली ज्यावै तो बो ओरूं चीणा रै ढेर माथै आ ज्यावै । ओ टाबरां रो खेल बारो बाप हरियो कैणक री बाल कूटतो देखै, पण— गोपालियै नै पालै कोनी । जदकै ईं खेल स्यू चीणा खिडै है ।

म्हूं ईंरो कारण जाणू । ओ भीखू री जिन्दगी रो तीजो दिखाआ है । म्हूं ईस्यू पैलडो दिखाओ भी देख चुक्यो । वा सन् छप्पन री बात है । मार्च-अप्रेल रो म्हीनो हो । हरियो बा दिना पन्दरह बरसा रो हो अर भीखू चाळीस रो म्हूं छुट्टि आयोडो हो । आ जमीन भीखू नै सरकार दी ही । साले'क पैली भूमिहीणा री दरखासा लागी ही । भीखू भी दरखास दी तो बीनैं आ पच्चीस बीघा जमीन मिलगी । वण पैली विरिया ईं-जमीन नै जोती ही । जद बो खळो काढण लाग्यो तो चौधरी गणपत आयो अर भीखू नै मार-कूट'र खेत स्यूं काढ़ दियो । आ जंमीन पैली गणपत री ही ।

बी घनै घणी ही, सो सरकार सीलिंग में काट'र भीखू नै देय दी। भीखू घणोई रोयो-चिल्लायो। के थाणो, के तसील? सैं अणसुणी कर ग्या। गणपत सगळो नाज आपरै घरे लेग्यो। बा दिनां भीखू रो बाप जीवतो हो,—नानक।

नानक सत्तर रै नेड़ै-तेड़ै हो। गांधी बाबा कै सत्यागिरह रो सिपाई रह चुक्यो हो, दौड़'र नाज री गाड्यां रै आगै आ'र लेटग्यो। गाड्यां ऊपर स्यूं निसरगी। नानक बठै'ई मरग्यो। बिनै के ठा हो'कै, अबै गांधी बाबा आळो सित्यागिरह नीं चालै।

भीखू री आंख्यां में एक ही आंसू नीं आयो, जदकै बीरै बाप नै बीं री आंख्यां सामी कुचळ'र मार नाख्यो। म्हूं ईं रो कारण जाणूं। ओ भीखू री जिन्दगी को दूजो दिखाओ हो। म्हूं ईं स्यूं पैलड़ो दिखाओ भी देख चुक्यो।

बा सन् चौबीस री बात है। म्हूं छव बरस रो हो अर भीखू आठ बरस रो। बीं रो बाप नानक अड़तीस रै नेड़ै-तेड़ै। नानक, ईं गणपत रै बाप नन्दराम चौधरी रै खेत में मजूरी करतो। नानक सारै दिन खेत में काम करतो अर दो जूण रोटी खांवतो। जद खळो कढतो तो बारवो हिस्सो नानक रो।

बी दिन बंटाई होवण लाग री ही'क झगड़ो के बात माथै होयो, मेरी जाणकारी स्यूं बाहर हो। म्हूं अर भीखू परपाटै रै ताल में गुल्ली-डंडा खेलै हा। रोवण-कूकण रो रोळो सुण'र म्हे खेत में पूग्या तो के देख्यो'क नानक नै पेड़ स्यूं बाध राख्यो हो अर चौधरी कोरड़ा मारण लागर्यो हो। भीखू जोर-जोर स्यूं अरड़ायो, "अरे मेरै बापू नै बचाओ—रै, अरे मेरै बापू नै बचाओ—रै," आसै-पासै रै खेतां रा पड़ोसी भेळा होग्या, पण छुड़ावण नै आगै कोई नीं आयो। बो-टैम ही नानक रो बाप, बुढो आग्यो। बुढो पैंसठ-छियासठ रो हो। आपरै बेटै नै बचावण सारूं आगै आग्यो। च्यार-पांच कोरड़ा पड़तां'ई बुढो बठैई ढेर होग्यो। आगलै दिन भीखू मनै बतायो'कै बीरो दादो बुढो रात नैं दम तोड़ दियो। ओ भीखू री जिन्दगी रो पैलो दिखाओ हो।

भीखू रो बाप नानक म्हीना तांई बीमार पड्यो रयो। वण चौधरी नन्दराम रै खेतां में काम करणो छोड़ दियो अर दूजां रै खेतां में काम करण लागग्यो। कदेई कीगै अर कदेई कीगै। मनै याद आवै'कै, भीखू री मा, भीखू री भैण, भीखू रो बाप अर भीखू खुद, घर रा सगळा-रा-सगळा लोग खेतामें काम करता। फसल काटणी, हल जोड़नो, कुप्प बांधणो, निनाण काडणो अर पाणी लगावणो, सगळा काम, सारै-सारै दिन अर सारी-सारी रात। पण भीखू नै पैरण नै म्हू-ही जद आपरो वोदो कुड़तियो देवतो तोई वो ढकीजतो। वो मेरो लंगोटियो बेली हो, परपाटै रै ताल मे म्हे भेळा ही गुल्ली-डंडा खेल्या करता।

समय रै सागै म्हूं अर भीखू मोट्यार होग्या। म्हूं नौकरी लागग्यो अर भीखू खेता में मजूरी करण लागग्यो।

सन् सैंतालीस मे आजादी आई। मैं भीखू नै कयो'कै, "भीखू अबै थारा दुखड़ा दूर होसी, सगळा गरीबां रा दुखड़ा दूर होसी। वी साल होळी पर म्हूं म्हारो रंगीज्योड़ो कुड़तियो भीखू नै दियो हो।

वरस पर वरस बीतता गया। भीखू मनै पूछतो, "आछा, दिन कद आसी ?" म्हूं वीरो काळजो टिकावतो'कै, "वेगी आसी, जरूर आसी। वो मजूरी करतो अर म्हूं सहर मे नौकरी। जद कदेई म्हूं छुट्टी-छपाटी घरे आंवतो तो वीस्यू जरूर मिलतो। वीस्यू नूंई-पुराणी बाता री बतळावण करतो अर काळजो टिकावतो'कै, आछा दिन जरूर आसी।

सन् पचपन री दिवाळी पर म्हूं घरे आयो तो भीखू स्यू मिलण वीरै घरे गयो। वीनै बतायो'कै, "भूमिहीणा री दरखास्ता लागण लागरी है। तू मेरे सागै चाली, तेरी भी दरखास्त लगवा देस्यू।

वण अर्जी दे दी अर पच्चीस बीघा जमीन वीनै मिलगी। पण मिली नन्दराम चौधरी री मौलिग मे कट्योड़ी जमीन। नन्दराम तो सरीर पूरो कर चुक्यो हो, पण वीरो बेटो गणपत भी बाप स्यू ... हो ही। भीखू नै खेत मे घुसण ही नी दियो। पुलिस ... दिला'र चलेगी। खळै रै वखत गणपत आयो, झगड़ो ... नै मार-कूट'र खेत स्यू काढ दियो। नाज चक'र ले...

रै बाप नै मार'र चले ग्यो।

गणपत री कैद होग्यी। बींरो बेटो जगदीश भी बाप स्यूं कम नी हो। बण भीखू नै खेत स्यूं बे दखल ही राख्यो। थाणै-तसील री सगळी खाक छाण मारी, पण के मजाल कोई हाथ मेलण दूयैं। जठै भीखू पुकार लगांवतो, जगदीश जेब ताती करयांवतो। बीस बरसां तांई भीखू अरड़ा-वतो फिर बोकर्यो, पण किणैई कान तांई जूं नी सरकी। पुलिस आयी कब्जो दिला'र चलेगी। जगदीश आयो'र मारकूट'र बेदखल कर दियो। वाल बठै री बठै। कदेई कचेड़ी स्यूं स्टे आ ज्यावै, कदेई थाणेदार नै टैम कोनी, कदेई तहसीलदार नै जुकाम हो ज्यावै।

भीखू मनै पूछतो, "आछा दिन कद आसी?" बो मेरो लगोटियो बेली हो। परपाटै रै ताल में म्हे भेळा ही रमे करता हा।

पिचेत्तर की जून में इमरजेंसी लागगी। देश में मच्योड़ी रापटरोळा बन्द होयगी। थाणेदारां अर तहसीलदारां री लगाम कसीजगी। म्हूं दो साल पैली स्यूं रिटायर होयोड़ो हो। भीखू नै कयो'कै, "अबै मौको है, भीख! रो; जोर-जोर स्यूं रो।"

बो कलेक्टर सा'ब आगै पेश होयो। दरखास दी नकल मुख मंत्री जी नै भेजी। पुलिस आयी, नाजम सा'ब आया। तसीलदार जी फाइल चकै सागैं-सागैं अर पटवारी जी बस्तो ऊचाए लारै-लारै।

खेत स्यूं गणपत रो कोठो ढो दियो। भीखू नैं ओरू कब्जो मिलग्यो। आ अगस्त पिचेतर री बात है।

बैंक स्यूं करजो मिलण लागर्यो हो। म्हू कयो'कै, "भीखू, मोको है; चूक मत। इनै भी एक दरखास देदे।" भीखू नै करजो मिलग्यो। बण पच्चीस बीघा में हाड़ी बोयी। की चणा, कीं कणक, आड पर सरस्यूं भी। सगळो मिला'र कोई ढाई सौ मण नाज होवण री आस है।

हरियो कणक री बाळां कूटै है। गोपाळियो चीणा उछाळै। भीखू हुक्को गुड़गुड़ावै।

म्हूं भीखू रै खनै जाऊं। बो मेरो लगोटियो बेली है। म्हे परपाटै रै ताल में भेळा ही गुल्ली-डंडा रम्योड़ा हां। बीरो पोतो किलकार्यां मार'र हसै। भीखू मेरै खानी देखै। बीरी आंख्यां में पाणी है। खुशी रो पाणी। ओ बीरी जिन्दगी रो तीजो दिखाओ है। ◻

गिरमाधारी

"टणन् ऽऽ ···· टणन् ऽऽ ······टणन् ऽऽ ······। तीन डंका लागग्या। अबै ताई सूंसाट छायोड़ी ही। डका लागतै पाण पढेसरी टाबरां री आपस री वतळावण स्यू रोळो-रप्पो माचग्यो जाणै'कै विधान सभा रो सून्य काल सरू होग्यो हुवै।

महादेव जी, चाक'ऊं धोलखीज्योड़ा हाथा नै झड़कावता काई जाणै किसी कक्षा रै कमरै स्यू निसर'र आवै। किताबा काख में दाब्योड़ी है अर हाथां नै इया छिदा कर राख्या है'कै, जाणै छिनेक पैली कोई भैंस बिवाण'र आया है।

पोणै छव फुटा छरहरा जवान। सफाचट गोरो मूडो अर गदगदो सरीर। अपूठा वायेड़ा छल्लेदार बाळ अर धोळा-धप्प गाभा मे फिलमी हीरो सा लागै। उमर, आहि कोई तीसेक रै नेड़ै-तेडै। स्टाफ रूम मे बड़्या अर काख मे दाब्योड़ी किताबां मेल'र गुसलखानै कानी चलेग्या। टूटी स्यू हाथ धोय'र मटकै खानी आय ज्यावै। पाणी पीवणो चावै हा'कै हैडमास्सा'ब उठीनै ही'ज आग्या।

पाकी उमर रा श्री गंगाराम चौधरी अठै रा हैडमास्सा'व है। टटा स्यू कोई डेढे'क इंच ऊँचो धोळो पायजामो, नान्ही चौकड़ीआळो आसमानी कुर्तो अर पगा मे पम्प-शू। मुह टोडियै ज्यू ऊंचाए [illegible] पड़ै'ई नी। घमंडी ज्योड़ा इत्ता'कै सावळ-मुंह [illegible]

बा, महादेव जी नै देखता'ई काळजै-डूबयोड़ा [illegible] दिया, "मास्सा'ब, आपरो घन्टो नी छोड़नो [illegible]

महादेव जी नै बात आकरी लागी। [illegible]

"हूणै'ई जाऊं सा।"

पण हैडमास्सा'ब धीरज कीस्सोड़ँ आळै स्यू त्यावँ, "जावो'कै नी ?"

महादेव जी रै जाणै मिनियै बटको भर लियो। एकर ओरूं खीची, "हणै'ई जाऊं सा" अर पाणी पीवण लागग्या।

हैडमास्सा'ब रै काळजै लाय सी लागगी। कये पछै भी ढीठ होय'र पाणी पीवण लागग्यो। बांनै, हुकम-ऊदूली देख'र चिण्डाळी चढगी। बाको फाड़'र गरज्या, "जावो'कै नी, भळै देर कांई बात री है ?"

"थानै खतावळ कांई बात री है ?" मानखो जातो देख मिनख रै हाथ स्यू काण-कायदै रो पल्लो छूट ही ज्यावै।

"थारी कक्षा में हाको होवण लागर्यो है अर थे अठै मटरगस्ती करता फिरो।"

"पाणी पीवणै नै मटरगस्ती कवै कांई ?"

"इमरजैंन्सी है मास्सा'ब, खीच्याई कोनी नीसरोला।"

"पाणी पीवणै माथै भी इमरजैंन्सी है ?"

"पाणी पीवण में किसा दस-बीस मिनट लागै ?"

"म्हे किसो घर मांड'र बैठ्यो हं !"

"जे नौकरी करणी है तो, कक्षा मे जाणो'ई पड़ैला।"

"नटै कुण है ? पण नौकरी कर सकां, गुलामी को हुवै नी।"

"जे मानखै रो इत्तो'ई धणेपो है, तो नौकरी भी नीं करणी चइजै।"

"आप घणा'ई भणीज्या, पण प्रेमचन्द नी पढियो। नौकरी अर गुलामी में डाडो'ई अळगाव हुवै सा। करमचारी अर अधिकारी दोनू एक ही कायदै स्यू बन्ध्योड़ा हुवै।"

अबै थे कांई बात पूछो। हैडमास्सा'ब रै वळीतै सो लागग्यो। आंख्यां गाजर ज्यूं लाल व्हैगी। तरणायटो खाय'र बोल्या, "म्हानै कायदा सिखावो, झाड़ो आवै नी अर झाड़ीगर बणो ! मास्सा'ब, थे कक्षा में जाओ परा। म्हारैऊ अबै ओर सैण नी व्है सकै।"

तलवारबाजी चोखी पण दांतबाजी खोटी। ईंस्यो हाको पाट्यो'कै

बीजा मास्टर'ईज वठै आय'र भेळा होग्या । चोफेर स्यू पढेसर्‌यां री निजरां बिनै'ई तकावै ही । महाज्देव जी रो मन खाटो होग्यो ।

हैडमास्सा'व भी आपरी इज्जत रो सवाल वणाय लियो । जे आज निवग्या तो कदेई ऊपरला हो'ज नी । मांदा मिनख नै तो माखिया ही नी धारै ।

दोनू ई आप-आपरै मानखै सारू अड'र ऊभग्या सगळा टकटकी लगाये वां'नै ही तकावण लाग र्‌या हा । जे कोई लारै हटै तो किया हटै ।

"आप जावोला'कै नी ?" बुढापै में केस बदळै, लक्खन नीं बदळै ।"

"नही," डूबतो सीवाळा मे हाथ घालै । नोकरी जासी परी तो काई होसी । सोनै रो सेलो पेट में खावण नै नी हुवै । हणै'ई हाड-गोडा थोड़ी टूटग्या, तगारी ढोय'र खा सकां । मिनख तो मानखै स्यू ही जीवै । प्रेमचन्द रा सवद बीरी खोपड़ी में गूंजण लागग्या । अपमान तो गुलाम ईज सैण कर सकै । बीरो दिमाग गुलामी पैली हुवै अर सरीरी पछै । चपड़ासी नै एक कोरो कागद ल्यावण को कैय'र महादेव जी स्टाफ रूम मे चलेग्या ।

हैडमास्सा'ब भी आपरै दफ्तर मांय गया परा । घंटी रो टरणाट ऊपड़्यो तो एक चपड़ासी बीनै भी भाज्यो ।

चाण-चक्की जिदोरो होवण रो लिख'र महादेव जी छुट्टि सारू अर्जी दफ्तर मे भेज दी अर आपरै घरे आयग्या ।

ईं मे दो बात नीं हुय सकै'कै मदरसै रो माहोल जे सातरो हुवै तो पढण-पढावणियां नै कोडायला वणा देवै ।

मई पिचेत्तर स्यू पैली ईं मदरसै रा ठाट ही जबरा हा । दिनूगै-सूणी सात बजे रै टैम, जदकै अगूणै पासै लाल सूरज रै पळकै स्यू पळपळाट करती मदरसै री बाखळ में पढेसरी टाबरा री टोळी कतारां मे खड़ी प्रार्थना गांवती फूलां री खुशबू स्यू महक्योड़ी मीठी-मीठी बयार आंवती तो पंछी तकात रो मन गावण लाग ज्यांवतो । डायळै मोर नै

आपरी पांख्यां रो छतो ताण'र नाचता देख मन रा मोर ईंज नाचण लागज्यावै।

हैडमास्सा'ब श्री नित्यानन्द जी, सगळां मास्टरां री सलाह्-मसवरै स्यूं योजना बणा'र भाईचारै स्यूं काम करावता। हेत री हाती हथाळी में ही भली मदरसै में पूरो लोकतन्तर हो अर पढाई-लिखाई सान्तरी। पढेसर्यां में नी तो धरमेन्दर कट हा अर नी राजेशकट, घणकरा गांधी कट ही'ज हा। इन्तजाम ईसो सुणो'कै जाणै रामराज। सगळा बा री सैन स्यूं समझता।

अर जद, गर्मियां री छुट्टियां रै पछै जुलाई में मदरसा खुल्या तो पैल भचाकै'ही नित्यानन्द जी कै कम्पलसरी रिटायरमेंट रो ओडर आय'न माथै लाग्यो। बांरो कसूर हो'कै वै लुगाड़-नेतावां रो घिगाण-पणो, मदरसै में नी चालण देवता। अबै बारी एक न्यारी जमात बणगी ही अर राज-काज रै आगणै ताईं बांह् पसरती ही। सरीफ मिनख तो बात स्यूं ही मार्यो जावै। नित्यानन्द जी रो मूंडो ही'ज उतरग्यो।

बारै बदळै अै चौधरी साहब आय धमक्या। पांच रिपिया में चरितर परमाणपतर, टी० सी० दीठ दस अर भर्ती रा पच्चीस। एकोएक रा भाव ताव थरपीजग्या। चू चपड़ माथै इमरजैन्सी लाग्योडी ही।

डर हो जठै ही दिन थमग्यो। फूलियो, पियोन-बुक रै सागै लिफाफो लियै खड्यो हो।

"काई बात है रे, फूलिया?"

"हैड मास्सा'ब, ओ कागद भेज्यो है, सा।"

महादेव जी कागद बाच'र लाल होग्या। बी टैम ही गुस्सै स्यूं उफणीज्योड़ा मदरसै पूग्या। आधी छुट्टि होयोड़ी ही अर घणकरा मास्टर ईं झमेलै सारू ही'ज बतळावण करण लागर्या हा।

महादेव जी, लाम्बा-लाम्बा डग भरता सीधा दफ्तर में जाय बड़्या, "हैडमास्सा'ब, म्हूं राड़ नै बाड़ देवण सारू छुट्टि लेय'र गयो हो, नीं'कै बधावण नै। थे बळती में पूळो नाखियो है। बाडियै रो लाय में कांई बळसी? जिकां रा काच रा महळ-माळिया हुवै, बे दूजां रै घर माथै

भाटा नीं बावै । आ, नीं सोच्या'कै इमरजैंसी रै हुव्वै स्यू इन्याव रै सामी लड़णियां डर ज्यावैला। इमरजैन्सी कोई हाऊ कोनी'कै खा ज्यावैलो । म्हे तो वहाव रै सामी तिरणोही'ज सीख्यो है, पाणी रै सागै सागै तो ल्हासा ववै । इमरजैन्सी के सदाई रवैला ? एक दिन ई काळी रात रो लाल सूरज ऊगैला । बी बखत आपरो कांई हुसी ? आ बादळां री छियां किताक दिन री ? बी बखत लारला सगळा हिसाब चुकीजैला । '

"आप म्हारै सामी डोको गाडण आया हो ?"

"डोका, वांस री होड़ थोडै'ई कर सकै ? वापरोला जठै तो बिखरैला ही । थे जद म्हारै लारै कागदी घोड़ा दौड़ाओला तो म्हे कांई चूड़ियां पैर राखी हैं ? म्हारो डरावण-धमकावण रो कोई मतो नीं, पण आपरी वात राखण रो हक तो म्हानै'ई'ज है । कसूर आपरो है । आप गळत तरीकै स्यू म्हानै ढिठियो । म्हे फेर'ही खैंची । आप म्हारी नरमी नै कमजोरी जाण'र उल्टा माथै आय चढ्या अर म्हारो मानखो भूडणो सरू कर दियो । थे, जे इण असलियत नै मान ल्यो तो राड अठै'ई मुक ज्यावैली । आगै थारी मर्जी ।" कैय'र महादेव जी स्टाफ-रूम मांय चलेग्या । कागद नै एकर ओरूं वांच्यो । बारी अर्जी नामंजूर कर'र हाजिर होवण रो हुकम हो ।

बाकी सगळां मास्टरां आप-आपरी अटकळां लगाई पण बात रो वतगड़ ही'ज वण्यो । निरी नायण जापो'ई बिगाड़ै ।

आधी छुट्टि पछै, महादेव जी कक्षावा में आवण-जावण लागग्या, पण पढावण नै मन कीको करै ? दिमाग तो उळझन मे उळज्योड़ो हो । ऊळजलूल बातां स्यू माथो भरणावै हो'कै, ओरूं पीयोन-बुक माथै चढ'र कागद आयग्यो,......आपने प्रधानाध्यापक के गरिमामय पद पर आरूढ निम्न हस्ताक्षर-कर्ता को अपमानित किया... "अवज्ञा की .... अन्य अध्यापकों को अवज्ञा करने के लिए उकसाया ......छात्रो के समक्ष अनुशासनहीनता का उदाहरण रखा......क्यों न आपके विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावे ?

"अै इंया थोड़ै ई मानेला, जो हुवैला सो देख्यो जावैला," बड़-बड़ांवता-बड़बडांवता महादेव जी कागद-कलम ल्यार लिखण बैठग्या अर कागदी घोड़ा री दौड़ सरू होयगी । अबै तेरा थधै'कै मेरा ! हैडमास्सा'ब आरोपा री झड़ी लगायदी । महादेव जी, आपरै बचाव सारू दलीलां देवण मे की ओछ नी घाली । सतरंज रो ख्याल मंडग्यो । कदेई थारा पैदल, कदेई घोड़ा अर कदेई वजीर तकात शै देवै । ठाकरां रा हुक्का कुण नी भरै ? आ-रा मोहरा कद शै देवै ? अै तो बादशाह नै बचावण सारू ही लिए फिरै । एकर पासो ईस्यो पलट्यो'कै एक ही चाल स्यूं थो काम होग्यो । आपरी शै भी बचग्यी अर सामलै रै शै भी लागगी, "······ आपने विभागीय अनुमति लिए बिना जनता से चन्दा एकत्रित किया और उससे बिना निविदा के कुर्सिया खरीदी । मैं शिक्षा निदेशक जी के लिए·········इसे अग्रेषित करने की कृपा करें······अग्रिम प्रतिलिपी सीधे······प्रेषित ।"

हैडमास्सा'ब नै शै बचणो ओखो होग्यो पानो बाचतां'ई हाथां रा तोता उड़ग्या । माटी री भीन पडतां जेज ही नीं लागी । ईस्या फंस्या'कै साकड़ी गळी अर मारकणो गाय । सातवों डकां लागतै पाण मास्टरां नै स्टाफ रूम में भेळो होवण रो नूतो आयग्यो ।

स्टाफ सक्रेटरी वेगो सी आय'र महादेव जी स्यूं मिल्यो, "अरे भाई, हणै बात नै नीचै ना पड़न देई ।"

"आट मे आयोड़ी लोह सेवट ही टूटै, आप फिकर नी करो ।" महादेव जी कयो ।

समूळी छुट्टि की टणटणी बाजगी अर बैठक सरू होयी । सक्रेटरी जी बोल्या, "भणीज्या-गुणीज्या साथियो, आज दिनूगै स्यूं दोफारै रो वखत घणो'ई भूंडो टपियो । अबै सिज्या-ताई जाय'र की ठंड पडी है । हैड-मास्सा'ब बडेरा है, इण सारू आंस्यूं ही आ अरज है'कै 'क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात' आळी तुलसी बाबै आली बात नै हिवड़ै में राख'र ईं बतंगड़ नै मुकावणो है । अबै म्हूं महादेव जी स्यूं अरज करूं'कै वै आपरी बात नै सगळा साथ्यां रै बीच कवै ।"

महादेव जी ऊभा होय'र बोल्या, "मानीता साथियो, कक्षा में जांवणो म्हारो काम है, पण मनै जिण भांत कयो गयो, म्हारो मानखो लेवण री कोसिस करीजी, बीस्यूं म्हारै काळजै में ठेस लागी। जे अै मनै आपरै परिवार रा जाण'र की कैवता तो इंया बात को बतंगड़ नी बणतो। म्हूं सफा बे कसूर हूं। पण राड़ मुकावण सारू अै बात दोनां नै ही मानणी पड़ैला'कै, की गलती म्हारी ही, की थारी ही अर की दोनां री ही।"

महादेव जी रै बैठतां पाण, हैडमास्सा'ब आपू-आप कुर्सी माथै बैठ्या-बैठ्या'ई बोलणो सरु कर दियो, साथियो, किसै'ई काम नै करण सारू आपरै नीचै काम करण आळा नै कदे'न' कदे; की न की कैवणो'ई पड़ ज्यावै। ईनै म्हूं गलती नी मानू, पण कैया करै'के ठाडै रो ठीगो सिर माथै। म्हूं, बात री ईं बतंगड़ नै रफा-दफा करण सारू सगळी कागदी-कारगुजारी फाड़ फैंकण री, बाबू जी नै कह देस्यू।"

फट्टाक-सी, महादेव जी बोलण सारू खड़्या होवण लाग्या'कै सारलै मास्टर जी झापड़'र बिठाय लियो, "थानै म्हारी सोगन, कूटलै माथै धूड़ नाखो।" ताळियां स्यू कमरो गूंज ग्यो।

हर बखत टाबरा में रैवणियां गिरमाघारी, टाबरां ज्यूं लड़'र पूठा राजी होग्या।

□

रूठी राणी

बैसाख रो म्हीनो अर चानण पख री चौथ। आ बिक्रम सम्वत् पन्दरह सो तिराणमें री बात है। बैसाख आधैऊं घणो टपग्यो हो अर लूआ चालण नैं त्यार खड़ी ही। पण जैसलमेर रैं गढ़ मे रौनक मेळा लागर्‌या हा। वठै रैं अधिपति भाटी लूणकरणजी की लाडली बेटी ऊमादे री ब्याव हो अर जान आवण आळी ही।

चारूं मेर आपा-धापी माच री ही। कठैई तो ढोलिया ढाळीजै अर कठैई छिड़काव होवै। कठैई अमल आरोग्योड़ा ठाकर मूंछ्यां पर ताव देवै अर कठैई आरोगण री त्यार्‌या होवैं ही। दमामण, ढोलकी री थाप पर, नरयावला अर ढोला गावैं। इसो उच्छास कै थे के पूछो बात। आखर जोधपुर रा राव मालदेव ढुकीजण नैं आवण आळा हा।

ऊमादे री हथेळ्यां में मेंहदी रचाइज्योड़ी ही अर सोळा-सिंगार करण मे दास्यां-बाद्यां की कसर नी छोड़ी। मिढ्यां गूंथीज'र सोने री सुइया लगाइजी। सीसफूल'र सुरळिया पत्ती स्यूं लमदम दमकतो चाद सो मुखड़ो। नाक री नथ, गुलाब री पांखुड़िया सा होठां पर पड़ी इतरावै। जद ऊमादे, कीं बोलण नै आपरा होठा नै धीरैं-सी'क ही'ज खोलै तो नथ रा मोती खुशी रैं मारैं पगळीज्योड़ा-सा नाचै नथली ईंयां लागैं'क जाणैं पीळो भंवरो गुलाब रस चूसैं अर सूअैं सी नाक निगराणी में ऊभी देखैं'कै सगळो स्वाद तां आ वैरण नथली ही लेगी। ओर-तो-ओर, गळै में गळसरी ईंयां गळबाथी घाले पड़ी ही'कै जे छूटकी, तो काचळी मे, उठता सांसा रैं सागै उठती अर बैठता सासां रैं सागै बैठती, आम्बोळ्या री ठोकर खाय'र के ठा कठै पड़स्यू ? कड़ इति पतळी'कै जाणैं सीताफळ

रो नेग करयोड़ो हो। छोरो कालेज में पढ़तो हो अर सगो, वी गाव मे ही गायां भेस्या रो ब्योपार करै। बूढळो नै भैंस री तनब, पण सगै खनै कोई आछी भैंस विकण सारू आवै जद बात बणै।

ठाह लाग्यो'कै आज दो आछी भैंस्या री विकाळी है। बूढली गई अर दो हजार रिपिया आळी भूरती भैंस छाटयाई। सिझ्या पड़्या जद भैंस दुरावण नै गई तो सांकळ नै हाथ घालताई सगो बोल्यो, "रिपिया नगदी लेस्यू जद भैंस देस्यूं। मनै ब्योपार्यां नं चुकावणा हा।"

बूढळी सकतै मे आयगी। सांकल हाथ मांय स्यू छूटगी अर मुह उतरग्यो। घरे आई तो आखरा गीली ही। सोच्यो हो'कै हाड़ी रै खळै पर रिपिया दिरीज ज्यासी अर हळकी होगी। और तो और, सगा-परसग्या में इत्तै दूध रो फोड़ो। कोनी पड़ै। टाबरा रो लुखासणो देख्यो कोनी जद तरळा मार्या हा।

अबै जे गांव मे ही रिपिया मिलता दीसता तो सगो तो सगो ही के मानखो थोड़ी मारतो। हार'र मास्टर नै बतळायो, 'भाई जी, कियाई दो हजार रिपिया कर'र द्यो, नी तो आज परसंग्या मे हळकी हो जासी।"

"इसी के बात है कै हळकी हो ज्यासी?" मास्टर पूछ्यो। अबै सारी बात सुण'र मास्टर नै भी अपरोगी लागी। सगां-परसग्या मे हळकी होणी तो धाप'र माड़ी बात है। पण मास्टर वापड़ो के करै। जे मास्टरा कनै'ही दो-दो हजार रिपिया अळगाऊ पड़्या होवै तो रोवणा ही क्यारा बण आपरी हथेळी झड़काय दी, "बाई! हूँ अणजाण जिग्या मे नूओ-नूओ आयोड़ो; रिपिया हूँ कठै स्यू ल्याऊ?"

सुण'र बाई नै आणेसो आग्यो। छोरा की करम रा होवै या जे बूढियो जीवतो होवै तो आ बात क्यू बणै। अबै करूं तो करूं के, किया जुगाड़ वणै? हार'र बोली भाई जी मेरे खनै तो अै सुरळिया-पत्ती है। आनै कठैई रख-रखा'र थे कियाई रिपिया तो ल्याओ। कुआरो साख रैयग्यो। नी तो म्हारी तो जमा'ई हळकी हो ज्यासी।"

"हूँ तो ओ काम कर कोनी सकू। न तो आज तांई

राखी अर ना मनै राखणी आवै। लारलै गांव-जठै स्यू हूं बदळीज'र आयो हो, एक बाणियो मेरो बेली हो। म्हे सतरंज रमे करता हा। थे कैवो तो हूं बीनै बतळा सकू हूं।" मास्टर रो काळजो भी, बूढली नै रोवतां देख'र बळण लागग्यो हो।

सुण तांई बूढली नै चेतो सो होग्यो अर गिरडाई, "थारो राम भलो करसी भाई जी, हाड़ी रा खळा आते पाण, सणै ब्याज एकोएक रिपियो पूगतो कर देस्या। आज कियाई मानखो ढकीज्योड़ो रह ज्यावै।"

"मनै जठै ताई ठाह है, वो डढ़ रूपियो सैंकड़ो माहवारी ब्याज तो दवै है अर दो रिपिया सैंकड़ो लेवै। जे घाट बाढ होवै तो भी हो सकै। थे कैवो बठै ताई लियाऊ काल मै मनै ओळमो नीं आ ज्यावै।" मास्टर आ बात खोल'र बतादी।

"थे ढाई रिपिया सैंकड़े ब्याज तांई ना चूक्या। हू च्यार मइनां रै मांय माय सणै ब्याज चुका देस्यू। रिपियो थड़ो'क मानखो? थे जल्दी करो।" बूढली मे खासा हौसलो दीसै हो।

दो दिना रै माय, मास्टर, दो रिपिया सैंकड़ै रै ब्याज पर, दो हजार रिपिया ल्या'र बूढळी नै दे दिया। बूढळी दिन ही कोनी ऊगण दियो। झाझर-कै'ई गूणियै में भैंस री धारां बाजै ही। तीन पाव आळो गुड़गुड़ो सो लोटो दूध ल्याय'र मास्टरजी नै पकड़ायो, 'लै भाभी!"

"ईयांई के लेवां बाई जी, म्हारी तो बन्दी बाद लो। रोजीना रो किलो दूध।"

"नंई भाभी, सात दिनां तांई तो हू थेई राख स्यू, जिको म्हारा टाबर भी धाप'र पी लेसी अर थे भी पिओ। फर थे कैस्यो जितै री बन्दी बांध लेस्या।'

आठवें दिन स्यू बन्दी सरू होगी। एक दो-घरा मे ओर दिरीजण स्यूं चाटै-वांटै आळो खरचो भी निसर ज्यावै अर टाबरां रो लुखासणो भी हटग्यो। उन्याळै रो धीणो तकदीर आळां रै ही लाधै।

सालाना इम्तिहान आया। हँसतो-मुळकतो, ठमकै री चाल, सगो बूढळी रै घरै आयो। सगै-सगी री ठसका लगा-लगा'र बातां होवण लागी कई ताळ बाद सगै मास्टर जी नै भी हेलो मार लियो। मास्टर जी अदीत

वार मनावै हा। हेलो सुण'र आया। ईनली-बीनली बातां करतां-करतां सगै, मास्टर जी ने आपरै छोटियै बेटै नै पास करण री भुळावणी देय दी। मास्टर घणोई ना-नूकर करी पण छेवट हां भरणी पड़ी कै, "देख'र पूरी कोशिश कर स्यू।"

"नां सा, कोसीस ही नीं, ओ काम तो करणो ही पड़ैलो। म्हानै थोड़ा ही दिन पैली ठाह पड़ी ही' कै थे, छोरी रा मामा लागो। जद फेर थे भी म्हारा तो सगा ही होया। थांनै ओ काम तो करणो ही'ज पड़सी।" सगै ओर देय'र बात कैवण मे की कसर कोनी छोड़ी।

छोरै रै पास होवण री, खुद मास्टर कनै ही आय'र फसगी। अंगरेजी री कापी अर छोरै दो आखर ही कोनी लिख्या जद पास कियां होवै? दूजै रै भलै री छोड़, आपरै टाबर रै भलै सारू भी आपरा हाथ कोनी कटाई ज्यै।

छोरै रै फैल होताई, सगो आपरी सगी नैं ऊंदी-सूंदी सैंस बातां कैय-ग्यो। मास्टर छुट्टियां में घरे गयो अर जद पैताळीस दिनां स्यू पाछो आयो तो बाई खीची-खीची सी लागै। छेकड़ एक दिन मांयली बात बतावणी पड़ी, "भाई जी ! थानै दूजो मकान देखणो पड़सी।"

"क्यूं, इसी के बात होयी बाई?"

"सगो कैवै है,' कै जे मास्टर स्यूं मकान खाली नी करायो तो हूँ साख छोड देस्यूं। अबै थे कैवो जियांई हूं करण नै त्यार हूं।" बूढळी आपरी बात बताई।

मास्टर सकतै में आयग्यो। इसा भी मिनख हो सकै ! आ बात बींनै अणूती सी लागी। पण करै तो करै के ? मुंह उतरग्यो अर रोवणो सो आवै। काळजो करड़ो कर'र बोल्यो, "बाई, जे मेरै कारण छोरी रो साख छूट ज्यै तो धूड़ है, मेरे मामै पणै मे। हूं मकान बदल लेस्यूं।"

बो, बी मास्टर कनैं गयो, जिकै मकान दिरायो हो। बो ई गांव रो भाणजो हो। मास्टर बीनै सारी बता दी अर दूजो मकान देखण रो कैयो। अगलै दिन तांई बो एक मकान ढूढ ही लियो। मकान बदळण लाग्या तो मास्टर, बीं मास्टर नै, बूढळी स्यूं हिसाब-किताब नक्की करण रो कैयो

अर ओ भी कैयो'कै जे मेरै खानी कोई दूध पाणी रा या मकान भाड़ै रा टका-पइसा बाकी होवै तो अभी चूकल्यो।"

बूढली बोली, "ना लाडी आपणा की बाकी कोनी। आरां, दो हजार रिपिया सगै ब्याज देवणा है, जिका हूँ आगली एक तारीख ताई पुगता कर देस्यूं। चौधरी भाव उडीकै बेचता पाण, म्हारी पांती मिलताई म्हू नुड़ा देस्यूं।"

"देख मामी, काल नै मनै ओळमो नी आवणो चाइजै। जे भाड़ो भट्टो लेवणो होवै तो अभी खोल'र ले लै। फेर ना कई कै मास्टर म्हारा पइसा खायग्यो।"

"म्हू के थूक्योडो चाटूं? मकान मे विठाया हा जदई कै दियो'कै, मकान भाड़ो कोनी लूं। जबान तो एकर ही होवै।"

मकान वदळीजग्यो। आज दयूं, काल-दयूं करतां करतां, बूढळी पाच म्हीना टिपा दिया। हाड़ी रो खळो निकळ'र एडेई लागग्यो। दोनू मास्टरा रा, लारै फिरतां-फिरतां जूता घसग्या। वीरै बेटा नै चौधरी आगै सींरा राख्या ही कोनी, जद सावणी रो खळो उडींकीजै ही कियां?

सगै ब्याव करण री अड़ी लगाय दी। जदकै लोक में छोरी आळा ब्याव री अड़ी लगाया करै। अबै बूढळी रा फसी मे फटकण वाजै। छेकड़ बूढळी ने बीस बीघा वरानी खूड़ बेचणो पड्यो अर बो भी सगै री मारफत। आधो ऐड़ै वैड़ै अर आधो घर रै नैडै।

मास्टरा नै ठा लागी तो वै भी पूग्या। पण रिपिया तो सगै रै कब्जै मे हा। आपरो छोरो भेज'र बूढळी सगै नै बुलायो। सगो आयो। रामा-श्यामा कर्‌या अर सिराणै बैठग्यो।

"कित्ता रिपिया है?" सगै ठरकै स्यू पूछ्यो।

"दो हजार मूळ अर ब्याज न्यारो।" मास्टर कैयो।

"ब्याज के हिसाब स्यू है?"

"दो रिपिया।"

"क्यू लूटणो है के?" सगो घोरकै स्यू बोल्यो। मास्टर बूढली कानी देख्यो, जिकी घूंघटो काढ्यां बैठो ही। जद बूढली कीं नी बोली तो मास्टर

नै ही बताणो पड्यो'कै, ओ ही तै कर'र ल्याया हा ।

"ठीक है, कुल किता होया ?"

"दस म्हीनां रै ब्याज सणै चौईस-सौ रिपिया ।"

"थे मकान में कित्ता म्हीना रैया ?"

"आठ म्हीना ।"

"आठ म्हीना रो आठ सौ रिपिया मकान भाड़ो । सौ रिपिया पाणी रा अर सौ रिपिया मांचा बिस्तरां रा । बाकी चौदह सौ रिपिया अै पकड़ो अर राह लागो ।"

"मामी ओ के तरीको है ? जद मकान भाडै री कोई वात ही कोनी ही, तो अब किया आई ? पाणी रो आठ म्हीना रो बिल ही जद चौंसठ रिपिया आवै तो बत्तीस स्यूं ज्यादा मांगण रो हक ही कोनी । फेर आयोड़ै बटाऊ खातर कीगे बिस्तरां री जरूरत कोनी पड़ै ? गाव में कणी और ही मांचा-बिस्तरा रो भाडो लियो है'कै थे ही नुआ मांग रैया हो ?" मकान दिरावणियै मास्टर पूछ्यो ।

"तेरी मामी के बतासी लाडी, हू बता स्यू । जे रकम रो ब्याज लागै तो मकान-भाडो भी लागै । घर रा छोरा-छोरी सारै दिन मडी भाज्या फिरता कै मामो ओ मंगावै, मामो वो मंगावै । अबै रिपिया चुकावता क्यूं जीव दोरो होवै ? ओ तो म्हूं ही मकान दिरायो हो, नीं तो ई कमीण नै कुण मकान देवै हो ।" सगो, मास्टर आगै चौदह सौ रिपिया मेल आपरै घर कानी गयो परो ।

बूढळी घूघटो काढे-काढे ही मायली साळ मे बडगी । दोनू मास्टर कदेई तो रिपिया कानी देखै, कदेई बो बी कानी अर बो बी कानी ।

□

भतूळियो

भीवै रै गळी में पग धरता'ई बिलडी रस्तो काटगी । बो पाछो घर में वड़ग्यो । परीडै स्यू एक लोटो पाणी लियो अर बिना तिस ही पीयो । जूती झड़काय'र पैरी अर ओज्यू चाल्यो ।

गांव रै उत्तरादै पासै जूणै पीपळ रै नीचे एक बावोजी रैवै । दूर-दूर ताई पीपळी-वावै रै नाम स्यू जाणीज्यै । भगवां भेस, कोटण टेरालीन रो गिट्टा तांई चोळो, सिर पर उळज्योड़ी जटा स्यू बणायोड़ो पगडी जिसो जुड़ो । टूणा-टसमण, झाड़ो—जन्तर अर डोरा ताबीज स्यू ले'र आक बता वण ताई सगळा काम जाणै । पचास बरस री उमर मे हट्टा-कट्टा जवान सा लागै ।

भीवै बावोजी रै पगां धोख खाई, सवा सेर आखा अर सवा रिपियो बाबोजी रै चरणा मे रख दियो । धूणै स्यू राख री चुटकी लेय'र आखा ऊपर छिड़की अर बाबोजी आख मींचकर बैठ ग्या ।

कई ताळ बाद आख खोल'र भीवै नै पूछ्यो—"कुण बीमार है ?"

"मेरी बेटी, जानकी ।"

"छोरी रो ब्याव कर दियो'कै नही ?"

"नित बीमार रैवती जद कणी स्यांणै कैयो'कै पराई करद्यो तो सावळ रैसी । इण खातर दो बरस पैली ब्याव कर दियो हो ।" भीवै बात खुलासा बतांई ।

"सासरै कित्ती बार गई ?"

"अजै मुकलावो कोनी करयो ।"

"कित्तीक ऊमर है ?'

"आठ बरसां री हैं।"

बावोजी थोड़ी ताळ सोच्यो अर बोल्या, "पितरां दोष है।"

"म्हारै कोई पितर है' ई कोनी, बावो जी। भीवै कैयो।

"छोरी रै सासरै मे पितर है। बीरो ही दोष है।" बावो जी बात समझाई।

"कोई तजवीज बताओ बावो जी।" भीवों बोल्यो। बावो जी ओरूं सोच मे पड़ग्या। कई ताळ बाद बोल्या, "सवा मण धान, सवा सेर घी, सवा पांच गज कपड़ो, सवा सेर मिठाण अर सवा इक्कीस रिपिया पितरां रै नाम स्यूं दान करो। हूं डोरो बणांय देस्यूं थोड़ी ताळ नै आय'र ले ज्याई।"

भीवै बावोजी रै धोक खाई अर घरे आग्यो।

भीवा राम, मिनखां मे मानीजतो मिनख। एक औलाद आ छोरी, जानकी। पण बा नित बीमार रैवै।

बास री लुगाया भैळी होयी बैठी ही। घणकरी लुगाया नै बावो जी आळी बात, सोळा आना साची लागी।

धापली री मां बोली, "मेरे पीरै मे म्हारो छोटियो काको ब्याव रै दूजै साल ही समाइजग्यो। एक साल बाद काकी बीमार रैवण लागगी। दौरा पड़ता जाडा जुप ज्यावता अर बकण लाग ज्यावती। एक स्यांणै नै आखा दिखाया तो ठाह लाग्यो'कै काको पितर होग्यो। म्हे मानण लागग्या। स्याणै कै बतायै-बतायै थान बणा दियो। रात जगा दी अर बानै ही जिमाय'र पांचू कपड़ा दे दिया। अमावस री अमावस काकी सीधो काढ'र दे आवै अर साल मे एकर रात जगा देवै। अबै सो की ठीक है।

ज्याना हा मे हां मिलाई, "थे सांची कैवो धापा री मा, पितर होवै जिका मनवाये बिना रैवै कोनी। हूं, ब्यावली आंबी बद थ जेठ तो दिसावरा मे ही रैवता। घर मे हूं अर म्हारी
अर इकान्तरै ही ताव चढ ज्यावतो। इकांतरै
सारो नीं आयो। आं ही पीपळी आळै
पड़ी'कै सुसरो जी पितरा जूण में है।

चढावणो पड़सी। रात जगाय'र पांचू कपडा देवणा पड़सी। जद म्हे मानण लागग्या तो ही हूँ सावळ रैवण लागी।"

"अबै म्हे के करां ?"—जानकी री मा बोली—"म्हारै तो कोई पितर है कोनी। ईं रै सासरै मे जे कोई है, तो सात सिलाम, म्हे कियां धोक सका हां ? धोकसी तो ईं रा सासू-सुसरो ही।"

"थे तो कोनी धोक सको जानकी री मा, पण सगां नै जिको कामळ उढावा हां, वो तो वै लेयसी।" धापली री मा बात समझाई।

इत्तीनै जानकी चिमकी अर बरड़ायो, "अरै बै···मानै···कोनी··· मनै···जीवण···कोनी ··देवै···पीपळी आळा···बाबो जी···वै···दीखै··· वो कुण···आवै बो मनै मारसी···ऐ माउड़ी · ऐ माउड़ी।"

"कुण दीसै बेटा ?" मा पूछ्यो।

"धोळै गाभा-आळो दीसै। वो मनै मारसी। वो मनै कैवै कै मेरै सागै चाल। बो मनै छोडै कोनी।"

जानकी री मा रुंआसी होयगी। आख्यां स्यूं चौसरा चाल पड्या, "हे म्हाराज, सात सिलाम कुण हो थे ? मेरी छोरी री जान बक्सो म्हाराज, हूं सवा पाच गज कपड़ो अर काम्बळ देस्यूं म्हाराज, देस्यूं।"

जानकी कदे तो सो ज्यावै अर कदे-कदे सूती-सूती अचानक ही चिमकै। कदेई रोवै अर कदेई बकण लाग ज्यावै। बीरी मा बीनै मसाई चुप राखै।

मा सवा मण कनक, सवा सेर मिठाण अर घर री भैंस रो सवा सेर घी तोल'र राख दियो। भीवो बजार स्यूं सवा पांच गज कपडो अर काम्बळ ले आयो। सगळो सामान अर सवा इक्कीस रिपिया, पितरा रै नाम स्यूं धोक लगा'र बाबो जी रै आगै मेल दिया।

बाबो जी समझावणी दी, "ओ तावीज छोरी रै गळै मे लाल चीलड़ी स्यूं बाध देया अर आ धूणै री राख, एक-एक चुटकी दिन मे तीन वार पाणी में घोळ'र प्या देया। काल ताई छोरी आछी हो ज्यासी।

दो दिन ओरू बीतग्या, पण जानकी री हालत मे कोई सुधार नीं आयो। अचाणचक ही चिमकै, रोवै अर जोर-जोर स्यूं बकण लाग ज्यावै।

भीवै रै काळजै मे भतूळियो सो उठै, "एक ही तो छोरी, वाही आज बचै कोनी। के करूं ? कठै जाऊं ?"

पड़ौस में मास्टर जी री बेटी अर जानकी री बेलण सुनीता आपरी मा नै बतायो तो मा-बाप दोनूं ही आया। जानकी रो डील तातो ऊकळै। मुंह फीको पड़ रैयो हो। हालत देख मास्टर जी भीवै नै कैयो—"भाई जी, जानकी नै अस्पताल ले चालो। आं टूणा-टसमणा मे कीं कोनी पड्यो।"

"पण लुगाया मानण देवै तो भीवाराम मानै। धापली री मा बोली, "टूणा तो साचा होवै, मास्टर जी, थे जे घणा पढग्या तो के आ झूठा थोड़ी होग्या ? मेरै पीरै में एकर एक लुगाई धोळै दोफारै निमटण गई अर एक भतूळियै री फेट मे आयगी। बीं रो घर-आळो थारै जियां ही पढयोड़ो हो, जको अस्पताल लेग्यो। वा मरी ही निसरी।"

ज्यानां बोली, "म्होरै वै साल-दो साल स्यूं एकर दीसावरा स्यूं आवता। पीतरजी नै मानता कोनी। एकर रात नैं माचो ही उलटीजग्यो, जद मानण लाग्या।"

"ना भइ सात सिलाम, हूं तो मान स्यूं म्हाराज ! मेरी छोरी नै ठीक करो। ईं रा सासरला नी मानै तो बानै ही दु:ख देवो। मेरी छोरी नै तो सावळ करो म्हाराज।" जानकी री मा घणी ताळ ताई ईयाई पितरजी नैं मनावती रैई।

वो दिन और वा रात और टपगी। छोरी नै बीमार पड्या पाचवों दिन होग्यो। बुखार एक सौ तीन रै नेड़ै-तेड़ै। सारी रात बैठ्यां-बैठ्यां काढी।

दिन ऊगताई मास्टर जी फेर आया अर भीवै नै समझायो। कै विकासनगर रै नेडै एक गांव है डोरांआळी। बठै एक स्याणो रैवै। मरीज नै देखताई सारी बात बता देवै। बीरा डोरा इसा पळै कै दूर-दूर स्यूं सैकड़ां री तादाद मे लोग रोजीना आवै। आपा जानकी नैं लेय'र चालां तो बो छोरी नै बचा लेसी, आ पक्की बात है।"

मास्टर जी री बात सही ढूकगी। जीप भाड़ै कर'र भीवों अर मास्टर जी, जानकी अर जानकी री मां नैं लेय'र तुरता-फुरत भीर हुया।

जीप विकासनगर आतां ही अस्पताल पूगी तो भीवैं मास्टर जी खानी देख्यो, पण अब मास्टर जी कीं दिवाळ कोनी हा। बोल्या, "भाई जी बो स्याणो अठै ही रैवै। छोरी नै मारणी है, कै जिवाणी है? जे डाक्टर जबाब दे दियो तो आपां डोरा वाळी चालस्यां। जे रात तांई की स्हारो नी आयो तो डोराआळी चालस्यां। एकर मेरी बात मानल्यो। फेर थे कैस्यो जियां ही कर स्यां।"

डाक्टर साहब फटाफट रोगी नैं सम्हाल लियो। जानकी नैं भरती करली। इंजैक्शन लगायो, कैंपसूल गिटाया अर ग्लूकोज चढाणो सरू कर दियो। सिंझ्या तांई खासा फरक पड़ग्यो तो भीवै रै की ज्यान में ज्यान आई।

डाक्टर साहब बतायो' कै, "जानकी नै हाइपर—पायरैक्सिया नाम री बीमारी होई है। नी तो कोई पितरां रो दोष है अर नी कोई ओपरी छांया।"

तीन दिनां में जानकी एकदम ठीक होगी।

□

मा बारो

चिट्ठी देखता पाण काळजे में धक्-धक् होवण लागगी। ज्यूं-ज्यूं बाचतो गयो; कानां मे सनसणाट सो गूंजती गई। आगो दिया पाछो पड़े। माथे में वर्णाट सो उपड़ै, लागै'क जाणै सगळो आभो चक्कर-घिन्नी घूमै है।

धुधळी सी याद है'क, ग्यारेक साल रो ही हो जदके मा, ई दुनियां में ठीये-ठरकायेड़ी खावण नै छोड'र सुरग सिधारगी ही। जद दादी री गोद रो आसरो हो। पण बादळा री छिया कित्ता'क दिनां री! नियति रा आंधी-तूफान जद अध-पाक्या नै ही नी छोडै तो पाका फळां नै तो टपक्यां ही सरे। दो-एक बरसां'रै नेड़ै-तेड़ै दादी-मां भी एकलो छोड़गी।

आड़ोसण-पाड़ोसण आपसरी मे बतळावंती, "लाई रै मां कोनी।"

"लारले जलम में धाप'र पाप कर्‌यैड़्या हुवै जद टाबर री मां मरै अर बूढ़ै री लुगाई मरै।"

"अण लाई मां रो के सुख देख्यो?"

"वण भी तो बेटै रो कै सुख देख्यो?"

"जापै मे ही माची झाल ली'क, छैकड़ अर्थी ही उठी।"

दुनियां किसो भात नी टिकण देवै। केई-केई तो अठै तांई कैय देवती'क, "जामतै ही मां नै खाय'ग्यो।"

दुनियां री जीभ कुण पकड़ै? सुण-सुण'र बो मन मसोस'र रह ज्यांवतो। क्यूंक जिण आंगळी रै लागै, उण रै ही पीड़ हुवै।

चचेरा-ममेरा भेण-भाई मां री गोद में घसक ज्यावता। बां री मावां बानै चूमती, लडांवती, पुचकारती अर छाती स्यू चिपकांवती। बो अनाथ

ज्यू पड्यो टकटकी लगायँ देखतो रैवतो। मन मे ओळू आवतीं'क, बीनैं ई कोई आपरी गोद मे लेलेवैं अर आपरी छाती स्यूं चिपाय'र लाड करैं। बीनैं कदेई ठा नी पड़ी'क, नर्म गुदगुदा बोबां सारे कनपटी लगाय'र सोवण रो सुख किसोक हुवैं। नन्दियं नैं ताई री छाती स्यू चिप्योड़ो बीरो काळजो कसमसांवतो' क, कोई बीरा'ई लाड करैं, गालां नैं चूमैं, नुहाय'र माथे पर काजळ री टिक्की काढ़े।

बीरी सूनी आख्या पत्थरां रा देवतां सामी देखती अर टळक-टळक आंसू टपकांवती तो कोई चाची-ताई आपरे लाडेसर रो जूठो छोड्योड़ो चूरमो बीरैं आगैं सरका देवती। बखत आया राबडी ई खावणी पड़ै।

एक दिन घर में चहल-पहल होई, बैण्ड-बाजा बाज्या अर दूजैं दिन नूंझे गाभा में सिमट्योडी एक लुगाई आयगी। भूआ बोली—'घन्नु ! जा तेरी मां है, अस्पताळ स्यू ठीक होय'र आई है।"

वण भी सिर पर हाथ फेरियो, एक रमतियो भी दियो। पण आपरी गोद में लेय'र बीरा गाल नी चूम्या, छाती स्यू भी नी लगायो अर लाड करण री तो बात ही और, ओ ही नी पूछियो'क, इत्ता दिन मेरैं बिना किया रयो ? अर तेरो जी लाग्यो'क नी ?

बीरैं पचसाले मन ने भणक लागगी'क, आ तेरी मा कोनी। हाथां-पगां पर जम्योडैं मैल नैं जद या ठीकरी स्यू रगड़ती अर रोटी मांगते ही सिर माथे चिमटैं रो वटीड आ लागतो। ओडी री बळा मावड़ी याद आवै। वो कठंई खूणैं खचूणैं में लुक'र रोवतो-कुरळांवतो'क, "ऐ माउड़ी, तू जठैं गई है, बठैं मनैं'ई बुलाय ले।"

क्यूं'क, मा आप मारैं, पण किणी नैं मारण कोनी देवैं।

पण मन चाया किगा हुवै ? जूठा-जूठा खाय'र अर ऊतर्या-पूतर्या पहर'र, बो घर रो खोरसो करतो-करतो मुटियार होयो। दूजबर री गोरडी मळिया दे-दे खावण आळी बात। बाप बाप ज्यूं रयो ही कोनी। भीगी बिलड़ी ज्यूं कान दबोच लिया। सायना-संगळिया जद बी० ए० एम० ए० करैं हा, बीस्यू दसवी मसांई करीजी।

फोरा दिन कैय'र नी आया करैं। जियां-कियां बो नौकरी लागग्यो अर

मुड'र घर कानी मुडो'ई नी करियो। अबे लोग बीनै ढूढता फिरै हा। साख-पात री बात चाली तो कदेई मां-बाप धणाप जचावै अर कदेई चाचा-ताऊ। मोबी बेटो तो माइतां ने व्हालो लागै ही। सगळां री जीवणी हथेळी मे खाज आवै। कहवत है'क, पग पिछाणै मोचड़ी अर नैण पिछाणै नेह। बो सगळा नै ठोसो दिखाय' र घर-घराणै स्यूं बारो होयग्यो अर इसे ठिकाणै जाय'र ढूकियो'क, जठै लैण-दैण रो खड़को ही कोनी हो।

माटी रा घर अर फूस री छत ब्याऊं-मेर झूपड़ल्या अर छप्पर। पण काटा आळी बोरड़ी रा बोर मीठा हुवै। बठै लाड-प्यार री कीं कमी नीं ही। लाड, अणूतो लाड। जणो-जणो लडावै। साळी-सळहजां रा हंसी ठठ्ठा रो तो कैवणो ही कांई, दादस भी ईया लाड करै'क, बीनै आपरी दादी री याद आय ज्यावै।

सासू दूर-दूर अर अणबोली रैवै। अठै री रीत ही इसी'क, सासू जमाई स्यू बोलै कोनी।

एकर रात नै मोडै सी'क, जद नीद आंख्यां नै गुदगुदावण लागी तो थोडी ताळ मे ही घोड़ा बेच'र सोयग्यो।

कापती-सिहरती आंगळयां बीरै कैसां मे थिरकण लागी तो नीद उचटगी। आगळ्या नै ओलखण मे बीस्यू चूकनी पड़ी'क, जै बै आगळ्या नी ही ज्यां री उडीक ही। आंगळया री कड़ड़ोपण, पैरूआ री खुरदराहट अर हाथ रै चूडै री खड़खडाहट, बीस्यू की छानी नी रयी। पण बो अभी नी जाण सक्यो'क, आ कुण है, जिकी इत्ते लाड स्यू बीरो सिर पळूसण लाग रई है।

सिर पळूसण रो ढब इसो अलबेलो हो'क, बीरो मन सुरगा से सुख स्यू हळाबोळ होग्यो। आगलियां, बीरै कैसा नै कागसियै ज्यू सुलझावै अर कदेई माथै री पेशानी ताई आय'र पंपोळै। बो काळजै तांई चन्दन सी ठडक स्यू सराबोर हो'र गुदगुदाय उठ्यो। आगळयां, आंख, नाक अर गाल तांई आय'र थरथरा उठी अर हाथ अपूठो खिचीग्यो। बो निढाळ होयोड़ो मूत्यो सोच बोकर्यो'क, इसो सुरग सो सुख मिलतो ही रैवै।

कनपटी खने सी, नरम सो पल्लु लाग'र बीरै सरीर मे सरमराट सी

दोड़ाय दी । माथै पर एक जोड़ी होठ छपग्या, "पूच्च"अर बा उठ'र चाल पड़ी । बीरी आंख्यां खुलगी । धन्नु देख्यो'क, बा बीरी सास ही ।

ब्याव रै बाद लारले च्यार बरसां में मायड़पणै रो सायो-सो बीरै चोफेर ही मंडरावतो रैवतो ।

जीमण आळी टेम, चूल्हे रै सारै ही'ज बिठाय'र जिमावणो । नटतां-नटता ही शक्कर मे घी उंदावणो । सौ-पचास री जेब-खर्ची धक्के स्यूं जेब में ठूसणी । माथै पर तिलक लगावती गाला पर कूं-कूं रोळी री आगळ्यां छापणी । छोटे से टुकड़े री ठोड़ मिसरी रो बडो सारो डळो मुंह में ठूस देवणो ।

सासरै स्यूं बीर होवती वखत बीरो मन दुखी हो ज्यावतो । बो चावतो'क, जो मायड़पणै रो लाड-प्यार ईयांई मिल बोकरै अर बो अठैई बैठ्यो रवै । *पण करम री तो सगळे ही आजे अर करमहीण री खेती* छीण हुया करै ।

विधाता रो लेख कुण टाळ सकै ? टळक-टळक टपकता आसूड़ां स्यूं चिट्ठी भीजगी । बो एकर ओरूं मा-बारो होयग्यो ।

□□□